दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

7

3 इनरव्हील क्लब ने गोद लिया सरकारी स्कूल, बच्चों की शिक्षा में करेंगी मदद

5 कानपुर में चलती कार में हत्या

8 खेल मंत्री मांडविया ने शतरंज विजेताओं को किया सम्मानित

UPHIN51019 | वर्षः 02, अंकः 14 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 30 सितम्बर, 2024

गोरखपुर शहर को सौगात

अमृत सरोवर और किड्स प्ले– फंड जारी

संत कबीर नगर में डीएम आवास के पास– योग, खेल का मैदान

30 एकड़ जमीन को चिन्हित किया है। इस जमीन पर युवाओं, खिलाड़ियों, बुजूर्गों सभी के लिए एकल केंद्र खोलने की योजना तैयार की है।

गोरखपुर,संवाददाता

डीएम महेंद्र सिंह तंवर ने डीएम आवास के पास ही खाली 30 एकड़ जमीन को चिन्हित किया है। इस जमीन पर युवाओं, खिलाड़ियों, बुजूर्गों सभी के लिए एकल केंद्र खोलने की योजना तैयार की है। इसके तहत 50 लाख रुपये विनियिमत क्षेत्र मद से जारी भी कर दिए हैं। जल्द ही निर्माण में तेजी आएगी। इसके जिले में मेंहदावल बाइपास के चौड़ीकरण व सुंदरीकरण और अन्य विकास की योजनाएं चल रही हैं।

संतकबीरनगर शहर में योग, खेल का मैदान, अमृत सरोवर और किड्स प्ले का निर्माण कराया जाएगा। इसके लिए डीएम आवास के समीप जमीन चिन्हित हो गई है। इस पर कार्य के लिए विनियमित मद से 50 लाख रुपये जारी हो चुका है। इससे लोगों को एक जगह सभी प्रकार के मनोरंजन के साधन उपलब्ध होंगे।

शहर को आकर्षक लुक देने के लिए प्रशासन तमाम योजनाओं पर कार्य करा रहा है। इसमें मेंहदावल बाइपास के चौड़ीकरण व सुंदरीकरण का कार्य चल रहा है। इसके साथ ही शहर में डिवाइडर पर फूल–पत्तियां लगाई जा रही है। अब प्रशासन ने डीएम आवास के पास 30 एकड़ में योग, खेल का मैदान, अमृत सरोवर, किड्स प्ले एरिया बनाने की तैयारी में है।

इसके लिए जमीन चिन्हित हो चुकी है। इसके साथ ही 40 से 50 हजार मियावकी पदत्ति से पेड़ लगाए जाने की भी योजना है। इस योजना पर कार्य के लिए अभी विनियिमत क्षेत्र मद से 50 लाख रुपये जारी किए गए हैं। इसके साथ ही विभागीय बजट से बाकी कार्य कराए जाएंगे। डीएम महेंद्र सिंह तंवर ने बताया कि शहर में योग, खेल का मैदान, अमृत सरोवर, किड्स प्ले आदि का निर्माण कराया जाएगा। हर्बल गार्डेन का काम शुरू हो गया है। अन्य कार्य भी जल्द ही शुरू करा दिए जाएंगे। अभी 50 लाख रुपये विनियमित मद से उपलब्ध कराए गए हैं। अन्य कार्य विभागीय मद से किया जाएगा।

होटल–दुकानों के बोर्ड पर भी नाम लिख लें किया नजरअंदाज तो होगा– 'कड़ा एक्शन'

गोरखपुर। जिले में होटल, रेस्त्रां, कैंटीन आदि मिलाकर करीब 15 हजार लाइसेंस जारी हुए हैं। शहर में तमाम दुकानें, होटल ऐसे हैं, जिनके बोर्ड पर पहले से भी संचालकों के नाम लिखे हुए हैं। बस स्टेशन और रेलवे स्टेशन के बीच खाने–पीने की अधिकतर दुकानों पर संचालकों ने अपने नाम लिखवा रखे हैं।

खाने–पीने की दुकानों पर संचालक और प्रबंधक के नाम लिखने के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर जिले का खाद्य सुरक्षा विभाग भी अलर्ट मोड में आ गया है। बुधवार को उपायुक्त (खाद्य सुरक्षा) और मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी ने टीम के साथ शहर के प्रमुख इलाकों में जाकर होटल संचालकों को नियमों का पालन करने का निर्देश दिया। अभियान चलाकर इसकी जांच की जाएगी और नियम का पालन न करने वालों के खिलाफ एक्शन लिया जाएगा।

जिले में होटल, रेस्त्रां, कैंटीन आदि मिलाकर करीब 15 हजार लाइसेंस जारी हुए हैं। शहर में तमाम दुकानें, होटल ऐसे हैं, जिनके बोर्ड पर पहले से भी संचालकों के नाम लिखे हुए हैं। बस स्टेशन और रेलवे स्टेशन के बीच खाने–पीने की अधिकतर दुकानों पर संचालकों ने अपने नाम लिखवा रखे हैं।

अन्य इलाकों में भी कमोबेश ऐसी ही स्थिति है। हालांकि, बड़े होटल या रेस्टोरेंट पर इसकी बजाय फर्म का नाम होता है। मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी हितेंद्र मोहन त्रिपाठी ने बताया कि शासन के निर्देश का पालन कराया जाएगा, जिनके बोर्ड पर संचालक–प्रबंधक के नाम का उल्लेख नहीं होगा, उनके खिलाफ कड़ा एक्शन लिया जाएगा। उपायुक्त सुधीर कुमार ने बताया कि खाद्य सुरक्षा से संबंधित नियमों से लोगों को अवगत कराया जा रहा है। होटल व रेस्त्रां संचालकों को खास तौर पर निर्देश दिए गए हैं कि सफाई ठीक रखें, अन्यथा जांच में कार्रवाई की जाएगी।

पिता ने फांसी लगाने से रोका बेटे ने ईंट से कूंचकर कर दी हत्या

शादी करने की कर रहा था जिद

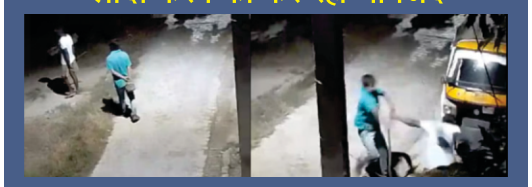

गोरखपुर। पिपराइच क्षेत्र के हरखापुर निवासी सत्यप्रकाश तिवारी उर्फ सकरम (45) पहली पत्नी के निधन के बाद दूसरी शादी की। पहली पत्नी से बेटे कन्हैया (18) के साथ रहते थे। लेकिन, बाद में कन्हैया की नशे की आदत से परेशान होकर सत्यप्रकाश मोटेश्वर मंदिर पर रहने लगे। बुधवार की शाम साढ़े सात बजे नशे की हालत में कन्हैया उनके पास पहुंचा और शादी कराने की जिद करने लगा। खुदकुशी से रोकने पर शराबी बेटे ने ईंट से कूंचकर पिता की हत्या कर दी। बुधवार की रात पिपराइच क्षेत्र में हुई इस वारदात के बाद आरोपी फरार हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस और फॉरेंसिक टीम मौके पर पहुंच गई।

जानकारी के अनुसार, पिपराइच क्षेत्र के हरखापुर निवासी सत्यप्रकाश तिवारी उर्फ सकरम (45) पहली पत्नी के निधन के बाद दूसरी शादी की। दूसरी पत्नी भी छोड़कर चली गई। इसके बाद पहली पत्नी से बेटे कन्हैया (18) के साथ रहते थे। लेकिन बाद में कन्हैया की नशे की आदत से परेशान होकर सत्यप्रकाश मोटेश्वर मंदिर पर रहने लगे। बुधवार की शाम साढ़े सात बजे नशे की हालत में कन्हैया उनके पास पहुंचा और शादी कराने की जिद करने लगा।

काली कमाई से टेंपो चालक रफी ने जमाई सियासी धमक...

कुशीनगर। जाली नोटों और अवैध असलहों के अलावा तमाम गैरकानूनी धंधों में लिप्त सपा लोहिया वाहिनी के राष्ट्रीय सचिव रफी खान बबलू का बचपन मुफलिसी के अंधेरों में गुजरा। सेल्स टैक्स के बैरियर पर पर्ची काटने और टेंपो चलाकर परिवार का खर्च चलाने वाला रफी खान जब काली कमाई की राह पर उतरा तो एक दशक में अकूत संपत्ति जुटाकर सियासी गलियारों तक अपनी धमका जमा ली।

बस्ती जिले के रहने वाले मोहम्मद हनीफ तीन दशक पहले तमकुहीराज कस्बे के पशु अस्पताल में स्टॉक मैन थे। बाद में शादीशुदा हनीफ ने यहीं की एक युवती से शादी कर गुदरी मोहल्ले में जमीन खरीदकर मकान बनवा लिया। दूसरी पत्नी से रफी खान समेत दो बेटे हुए। रफी का भाई असमय चल बसा था। रफी की पढ़ाई तमकुहीराज के शिशु मंदिर, भटवलिया के फतेह मेमोरियल इंटर कॉलेज और सेवरही के किसान पीजी कॉलेज से हुई। पिता की मौत के बाद परिवार की जिम्मेदारी रफी पर आ गई। शुरुआती दिनों में आमदनी बहुत कम थी और परिवार मुफलिसी के दौर से गुजरने लगा। रफी हाईवे के गाजीपुर स्थित सेल्स टैक्स बैरियर के

पूर्व डीएम के नाम से चलाता था फेसबुक

फॉर्म दफ्तर में काम करने लगा। वह सामान लदे भारी वाहनों का प्रपत्र भर कर बिहार, आसाम, बंगाल आदि स्थानों पर भेजने का काम करता था।

इसके बाद ट्रांसपोर्ट के धंधे में घुसा तो बिहार में उसकी पकड़ बढ़ती गई। उसने वैध–अवैध कामों से कमाई शुरू कर दी।

सम्पादकीय

विदेश नीति और कूटनीति में असफलता के नुकसान

32,87,263 वर्ग कि. मी क्षेत्रफल के साथ भारत दुनिया का भौगोलिक तौर पर सातवां बड़ा देश है और करीब 144 करोड़ की आबादी के साथ दुनिया में सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है।

32,87,263 वर्ग कि. मी क्षेत्रफल के साथ भारत दुनिया का भौगोलिक तौर पर सातवां बड़ा देश है और करीब 144 करोड़ की आबादी के साथ दुनिया में सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है। लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने क्वाड ('क्वाड्रिलेटरल सिक्योरिटी डायलॉग') बैठक में हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का परिचय कराते हुए भारत के बारे में कहा कि यह एक छोटा देश है, जिसकी आबादी बहुत कम है।

दुनिया की एकमात्र महाशक्ति होने का दावा करने वाले अमेरिका के राष्ट्रपति का सामान्य ज्ञान शायद इतना कम नहीं होगा, और हो सकता है यह बात उन्होंने मजाक में कही हो। क्योंकि अपने इस निकृष्ट स्तर के मजाक के बाद उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी को अपना मित्र भी बताया। मोदी–बाइडेन के बीच अनुमानित मजाक के इन क्षणों का वीडियो सोशल मीडिया पर उपलब्ध है, जिसे पाठक देख कर समझ सकते हैं कि अमेरिका और भारत दोनों किस तरह कूटनीतिक तकाजों में चूकते जा रहे हैं। क्वाड का मंच अंतरराष्ट्रीय कूटनीति और सहयोग के लिए बना है, इस तरह के ओछे मजाक के लिए नहीं। अगर जो बाइडेन और नरेन्द्र मोदी में गहरी दोस्ती है, तब भी इसमें कूटनीतिक शिष्टाचार को परे नहीं किया जाना चाहिए। नरेन्द्र मोदी इससे पहले पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा को केवल बराक कहकर या डोनाल्ड ट्रंप के लिए अबकी बार ट्रंप सरकार कहकर भारत की शर्मिंदगी का सबब बन चुके हैं, इस बार जो बाइडेन ने नरेन्द्र मोदी को टक्कर दे दी।

अमेरिकी राष्ट्रपति ने भारत के बारे में यह अभद्र टिप्पणी करने से पहले एक और गलती की थी, जब क्वाड देशों के राष्ट्राध्यक्षों का परिचय कराने के सिलसिले में वे प्रधानमंत्री मोदी का नाम ही भूल गए थे। अमेरिका, जापान, आस्ट्रेलिया और भारत, इन चार देशों ने ही क्वाड का गठन किया है और इसमें जो बाइडेन को अपने अलावा तीन और लोगों का परिचय कराना था, जिसमें वे नरेन्द्र मोदी का नाम ही ऐन वक्त पर भूल गए और फिर उनके स्टाफ ने उनकी मदद की। इस भूल को छिपाने की कोशिश में ही शायद जो बाइडेन ने भारत के आकार और आबादी को लेकर टिप्पणी की। कारण जो भी हो, लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति का यह व्यवहार किसी भी नजरिए से अंतरराष्ट्रीय मर्यादा के अनुकूल नहीं था। नरेन्द्र मोदी ने भी बाइडेन की इस टिप्पणी के बाद हंसते हुए केवल थैंक यू कह दिया, जबकि कायदे से उन्हें उसी वक्त पूरी शिष्टता और सौम्यता के साथ बता देना चाहिए था कि दुनिया में भारत का स्थान क्या है। अगर नरेन्द्र मोदी ऐसा करते तो इससे भारत की मजबूत छवि दुनिया के सामने बनती। अफसोस कि श्री मोदी ने इस मौके को गंवा दिया। अगर श्री मोदी की जगह राहुल गांधी होते और वे इसी तरह थैंक यू बोलते तो भाजपा के नेता इस पर राष्ट्रव्यापी हंगामा खड़ा कर चुके होते कि राहुल गांधी ने देश का अपमान होने पर शुक्रिया कहा। अब देखना होगा कि नरेन्द्र मोदी के थैंक यू को भाजपा नेता किन दलीलों के साथ सही ठहराते हैं।

वैसे बात केवल भारत के प्रधानमंत्री को सही या गलत साबित करने की नहीं है, यह मसला पूरे देश की साख के साथ जुड़ा है। अभी हाल ही में जिस तरह राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल ने रूस के राष्ट्रपति के सामने बैठकर श्री मोदी की यूक्रेन यात्रा का ब्यौरा प्रस्तुत किया था, वह भी एक तरह से भारत का अपमान ही था। हमारी संप्रभुता को चुनौती थी। यह और अजीब बात है कि अभी अपने अमेरिका दौरे में फिर से श्री मोदी ने यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदीमीर जेलेंस्की से भेंट की। क्या अब फिर से किसी को दूत बनाकर व्लादीमीर पुतिन के सामने बैठाया जाएगा या खुद नरेन्द्र मोदी इस बार अपनी सफाई पेश करेंगे, यह देखना होगा।

अमेरिका या दुनिया के किसी भी देश में जाकर मोदी–मोदी के नारे लगवाना और प्रवासी भारतीयों के मुंह से मोदी की तारीफ और भारत के अमृतकाल की तारीफ करवाना भाजपा की रणनीति का हिस्सा हो सकता है, लेकिन इस रणनीति में भारत की विदेश नीति को ठेस न पहुंचे, यह जिम्मेदारी भी सत्तारुढ़ दल होने के नाते भाजपा की है। लेकिन भाजपा और नरेन्द्र मोदी दोनों इसमें चूक रहे हैं। अभी अमित शाह के बांग्लादेशी घुसपैठियों के बयान पर बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने जो आपत्ति दर्ज कराई है, वह भी विदेश नीति में की जा रही भूल का नतीजा है। पाठकों को याद होगा कि 2014 में जब नरेन्द्र मोदी ने पहली बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली थी, तो सार्क देशों के राष्ट्राध्यक्षों को विशेष तौर पर आमंत्रित किया था, ताकि आपसी संबंधों में प्रगाढ़ता आए। किंतु बीते 10–11 बरसों में श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश, पाकिस्तान सभी के साथ कई ऐसे प्रसंग हो चुके हैं, जिनसे परस्पर संदेह का माहौल बना है। इसमें दोष केंद्र सरकार का ही है, लेकिन अब भी भाजपा नेता इस मामले में समझदारी का परिचय नहीं दे रहे हैं।

झारखंड चुनावों में भाजपा ने घुसपैठियों के मुद्दे को अहम बनाया हुआ है, इसी के तहत पिछले दिनों भारत के गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि रोहिंग्या और बांग्लादेशी घुसपैठियों को चुन–चुनकर झारखंड के बाहर भेजने का काम भारतीय जनता पार्टी करेगी। ये हमारी सभ्यता को नष्ट कर रहे हैं। हमारी संपत्ति को हड़प रहे हैं। श्री शाह ने यह भी कहा था कि अगर झारखंड में भाजपा सत्ता में आई तो 'हर बांग्लादेशी घुसपैठिए को सबक सिखाने के लिए उल्टा लटका देगी।' इस बयान पर आपत्ति और दुख जताते हुए बांग्लादेश के विदेश मंत्रालय ने कहा, 'जिम्मेदार पदों पर बैठे लोगों की ओर से पड़ोसी देशों के नागरिकों पर की गई ऐसी टिप्पणियों से आपसी सम्मान और समझ की भावना कमज़ोर पड़ती है।'

बांग्लादेश की इस आपत्ति को वृहत्तर परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित करने की जरूरत है। हम अपने पड़ोसियों को बदल नहीं सकते हैं और न ही उन्हें नाराज करके अपनी शांति और सुरक्षा की आश्वस्ति कर सकते हैं। चीन जैसे ताकतवर और महत्वाकांक्षी पड़ोसी देश के रहते भारत को अन्य पड़ोसी देशों के साथ अतिरिक्त सावधानी के साथ कदम उठाने चाहिए, लेकिन मोदी सरकार के लिए शायद विदेश नीति जैसा गंभीर मसला भी चुनाव जीतने का एक टूल ही है।

सरदार सरोवर की जन्मगाथा

नर्मदा 1312 किलोमीटर लंबी बहती नदी और किनारे बसे पहाड़, जंगल ही नहीं, गांव– नगर, लाखों परिवार, उनकी पीढ़ियों की जीवनगाथा और चलती आजीविका...खेती, मजदूरी, वनोपज, मत्स्य व्यवसाय, या कोई कारीगरी की जटिलता और घाटी के संसाधनों पर निर्भरता, विशेष हकीकत रही। इस पर बड़े बांध से आने वाली डूब के और अन्य असरों के अध्ययनों के बिना ही फैसला आया, यह हकीकत स्पष्ट होती है। शुरुआत तो हुई 1959 में जब महाराष्ट्र और गुजरात एक होकर बॉम्बे सरकार थी। नर्मदा पर 'नवागाम बांध', पहले दौर में 162 फीट ही ऊंचा बनाने का प्रस्ताव हुआ और उसे बढ़ाकर दूसरे दौर में 300 फीट तक ले जाने का! जल संसाधन और विद्युत मंत्रालय ने 320 फिट तक बढ़ाकर सौराष्ट्र और कच्छ तक सिंचाई पहुंचाने का प्रस्ताव, सलाहकार समिति की सिफारिश पर मंजूर किया। पहले दौर के निर्माण प्रस्ताव के बाद दूसरे दौर में 625 मेगावाट बिजली निर्माण भी संभव माना था।

1 मई 1960 को महाराष्ट्र– गुजरात स्वतंत्र राज्य बनने के बाद 1963 में केंद्रीय मंत्री डॉ. के. एल. राव ने 425 फिट का नवागाम बांध और पूरा लाभ गुजरात को तथा 850 पूर्ण जलाशय स्तर का पुनासा बांध (आज का इंदिरा सागर!) और उससे लाभों का बंटवारा मध्यप्रदेश और गुजरात में 2:1 मंजूर करवाया; 'भोपाल अनुबंध' के रूप में। मध्यप्रदेश शासन ने बाद में इसे नामंजूर करके विवाद उठाया और खारिज करवाया। इसके बाद शुरू हुआ आंतरराज्य विवाद, जिसके निराकरण के लिए इंदिरा गांधी ने गठित किया ट्रिब्यूनल, जो 1969 से 1979 तक चला। मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र, दोनों राज्यों ने 10 साल तक गुजरात में नर्मदा पर बड़ा बांध बनाने का विरोध दर्ज किया! मध्यप्रदेश में चला सर्वदलीय निमाड़ बचाओ आंदोलन!

दिसंबर 1979 में आंतरराज्य नर्मदा ट्रिब्यूनल याने जल विवाद न्यायाधिकरण का फैसला आया, जो परियोजना के विविध पहलू और असरों के अध्ययन पूरे करे बिना, विवाद के निराकरण का निर्णय था। 10 सालों के कार्यकाल में न्यायाधिकरण के सदस्यों ने नर्मदा घाटी की मुलाकात ली, वह मात्र शूलपाणीश्वर, हापेश्वर और कोटेश्वर मंदिरों तक सीमित थी, न ही किसी विस्थापित होने वाले गांव या परिवार की। महाकाय योजना को दी मंजूरी और साहूकारी भी बिना अध्ययन! नर्मदा 1312 किलोमीटर लंबी बहती नदी और किनारे बसे पहाड़, जंगल ही नहीं, गांव– नगर, लाखों परिवार, उनकी पीढ़ियों की जीवनगाथा और चलती आजीविका...खेती, मजदूरी, वनोपज, मत्स्य व्यवसाय, या कोई कारीगरी की जटिलता और घाटी के संसाधनों पर निर्भरता, विशेष हकीकत रही। इस पर बड़े बांध से आने वाली डूब के और अन्य असरों के अध्ययनों के बिना ही फैसला आया, यह हकीकत स्पष्ट होती है।

राष्ट्रीय स्तर पर 1993 में ही, विस्थापितों के अधिकार डुबाते हुए धकेले जाते बांध के विरोध में 1985 से शुरू हुए सतत सत्याग्रह, उपवास आदि के बाद नर्मदा आंदोलन से एक विशेष चुनौती दी गई, जलसमाधि घोषित होकर! उसके पहले 1988 का धरना और रैलियां, 1989 में 80 किलोमीटर चले आदिवासी और वाहनों से पहुंचे मध्यप्रदेश के निमाड़वासियों की हजारों की संख्या में बांधस्थल पर गिरफ्तारी हुई थी। 1990 में बाबा आमटे जी के साथ दिल्ली में प्रधानमंत्री निवास पर सत्याग्रह और बहुगुणाजी, सुगथा कुमारी जैसे की उपस्थिति में चर्चा; मुंबई के 8 दिन के उपवास के बाद शरद पवार जी का बांध स्थल पर पहुंचकर गुजरात और महाराष्ट्र के अधिकारियों सहित बैठक और पुनर्वास के बिना बांध आगे न बढ़ने देने की घोषणा... सब हो चुका था। 1990 में ही 5000 विस्थापितों का पैदल जनविकास मार्च और उस पर हुए दमन के साथ 21 दिनों का उपवास देश और दुनिया से सहयोग पा चुका था! फिर भी डूब का खतरा, पहाड़ी आदिवासियों पर छाते हुए जब जल समाधि का निर्णय लिया गया, तभी योजना आयोग के उपाध्यक्ष जयंतराव पाटिल जी की अध्यक्षता में बना 'पांच सदस्यीय समूह' जो जल संसाधन मंत्रालय के प्रमुख सचिव रहे रामस्वामी अय्यर, अर्थशास्त्री एल. सी. जैन, वसंत गोवारीकर, कुलदैप स्वामी जैसे आंदोलन और शासन से प्रस्तावित मान्यवरों का था। दोनों पक्षों की सुनवाई और प्रस्तुतियों के बाद उनका भी निष्कर्ष रहा, सरदार सरोवर के नियोजन में अधूरापन और लाभों के गलत दावों का 100 साल में 75 नहीं, मात्र 61 साल ही भर सकता है जलाशय पूर्ण और शायद मिल सकते हैं, अपेक्षित लाभ; यह कहते हुए पर्यावरणीय और सामाजिक हानिपूर्ति याने पुनर्वास के भी अधूरे नियोजन पर कड़े सवाल उठाने वाली उनकी रिपोर्ट शासकों को स्पष्ट चेतावनी देती रही!

गुजरात के आग्रह पर, बांध को आगे बढ़ाने का निर्णय जब भारतीय शासकों ने लिया, तब विस्थापितों का आंदोलन सर्वोच्च अदालत तक पहुंच गया और 1994 से 2000 तक चली सुनवाई, भूतपूर्व विधिमंत्री शांतिभूषण और अधिवक्ता प्रशांत भूषण के द्वारा, केंद्र शासन के तमाम वरिष्ठ अधिवक्ताओं के आमने सामने! याचिका प्रस्तुत होने के बाद भी बांध की उंचाई 69 मीटर से 80 मीटर तक बढ़ाने का निर्णय शासन ने, 'अनैतिक' मानी गई प्रक्रिया से जाहिर करने पर, डूबग्रस्त होने के खतरे को चुनौती दी, आंदोलनकारियों के 26 दिनों के उपवास से। इसी दौरान तत्कालीन मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह के नेतृत्व में 16 दिसंबर 1994 के रोज मध्यप्रदेश विधानसभा में सर्वदलीय प्रस्ताव पारित हुआ, सरदार सरोवर की ऊंचाई बढ़ने न देने का! जब सर्वोच्च अदालत में सर्व समावेशक याचिका में सुनवाई हुई तब मई 1995 से 1999 तक रोका गया सरदार सरोवर का कार्य, 80 मीटर पर।

नर्मदा जैसी सालभर अविरल बहने वाली नदी और उसकी 41 उपनदियों की घाटी में बर्गी, तवा, सुक्ता जैसे 30 बड़े और 135 मझौले बांधो के तथा 3000 छोटे बांधों के निर्माण का 'नर्मदा घाटी विकास' का प्लान ब्राजील की अमेजॉन या फ्रांस की लाइर नदी घाटी के जैसी विशाल योजना तो थी ही! लेकिन 3000 छोटे बांधों को भूल सी गई थी शासन! जो बांध बने थे, उनके विस्थापितों से तथा लाभक्षेत्र के जलजमाव, नहर व्यवस्थापन जैसे सवालों के ऊपर उठी थी क्षेत्रीय आवाज.. फिर भी इंदिरा सागर, सरदार सरोवर इन दो महाकाय बांधों को बढ़ावा देने की प्रक्रिया में 1979 से 1985 तक विस्थापितों की पूर्ण संख्या का ही नहीं, सामाजिक– आर्थिक– सांस्कृतिक धरोहर और अधिकारों का भी शोध नहीं हुआ महाराष्ट्र ने 1990, 1992 से लेकर 2004 तक कई आदेश निकाले! वनगावों में वनजमीन कसते आए आदिवासियों को हक मिला पुनर्वास का। 'टापू' में आते आदिवासी फलियों में रहते आदिवासियों का भी पुनर्वास हुआ। लेकिन आज तक जारी है, संघर्ष और संवाद भी! करीबन 200 परिवारों को आधा–अधूरा हक मिला है।

जिन्हें नहीं मिली पूरी या सही भूमि, वे मूलगांव में नदी किनारे है, साल–साल डूब भुगतते हुए, डटे रहते! कुछ आदिवासी बुजुर्ग गुजर गये, हक मिलने के पहले... कुछ फंसे हुए हैं, गुजरात में आबंटित काश्त के लिए अनुपयोगी या अ–सिंचित जमीन पाकर! महाराष्ट्र का पहला मतदार जिस गांव में है, उस 'मणिबेली' के नाम से दुनिया के 2000 संगठनों ने पारित किया था प्रस्ताव, माद्रिद, स्पेन में विश्व बैंक की 50 साल पूर्ति पर उन्हें चुनौती देते हुए। आज भी मणिबेली में जो बचे हैं परिवार, वे भी 1993–94 में डूब भुगते थे और आज भी है, पहाड़ की चोटियों पर रहकर, पानी, बिजली, रास्तों की समस्या भुगतते! मध्यप्रदेश में जो अन्याय भुगत रहे हैं, ऐसे कई आदिवासी, दलित, सभी समुदायों के प्रभावित, 1994 से पहाड़ी क्षेत्र में, तो मैदानी इलाके में 2000 से डूबग्रस्त होकर भी पुनर्वसित नहीं हैं। डूब की भूमि के बदले भूमि न दे पाने पर 60 लाख रुपए (5 एकड़ के बदले) देने के सुप्रीम कोर्ट के 2017 के आदेश के पालन के लिए सैकड़ों रुके हैं, विधवा, एकल महिलायें भी।

खुद को कठपुतली साबित करने पर आमादा हैं आतिशी

सदियों के राजतंत्र, लम्बी सामंतशाही व्यवस्था तथा 200 वर्षों की औपनिवेशिक दासता से लम्बा संघर्ष कर मुक्त होने वाले भारत के नवसामंतों को राजशाही का चस्का है

... तो अपनी ऊंची तालीम, दिल्ली सरकार में बतौर शिक्षा मंत्री के रूप में किया गया उनका चमकदार प्रदर्शन, शिक्षितों के संगठन आप की नेता होने की सारी उपलब्धियों को खाक में मिलाते हुए इन काबिल मोहतरमा ने अपनी बगल में यह कहकर एक कुर्सी खाली छोड़ दी, कि वह उनके गुरू व नेता अरविंद केजरीवाल की है। संदर्भः भरत का अजुध्या में चलाया गया खड़ाऊ राज। यानी वे नाममात्र के राजा थे। 14 वर्षों का स्टॉपगैप अरेंजमेंट– अस्थायी व्यवस्था। सदियों के राजतंत्र, लम्बी सामंतशाही व्यवस्था तथा 200 वर्षों की औपनिवेशिक दासता से लम्बा संघर्ष कर मुक्त होने वाले भारत के नवसामंतों को राजशाही का चस्का है। जब लोकतांत्रिक तरीके से चुने हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी धार्मिक विधि–विधानों के साथ और पौराणिक काल के डिज़ाइनर परिधानों में लिपटकर लोकतंत्र की सर्वोच्च आसंदी के बगल में मध्यकालीन सैंगोल का इवेंट रच सकते हैं, तो उनके नक्शे–कदम पर चलने वाली आम आदमी पार्टी की दिल्ली की नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री आतिशी मार्लेना सिंह अपनी कुर्सी की बगल में भला क्यों नहीं एक कुर्सी खाली छोड़ सकतीं, जो एक तरह से खड़ाऊ राज का प्रतीक है।

आप को सबसे ज्यादा पढ़े–लिखे लोगों की पार्टी कहा जाता है और आतिशी की तो उच्च शिक्षा ऐसे देश में भी हुई, जो अपनी लोकतांत्रिक परिपक्वता के लिये जाना जाता है। उनके माता–पिता मार्क्स और लेनिन से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने अपनी बेटी का नाम इन दोनों नामों के थोड़े–थोड़े अक्षरों से मिलाकर रखा था। हालांकि यह आश्चर्य की बात है कि वामपंथ से प्रभावित उनके अभिभावकों ने आतिशी को पढ़ने रूस या किसी साम्यवादी देश में न भेजकर एक पूंजीवादी देश ग्रेट ब्रिटेन के ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में भेजा था। यहां 'थ्री इडियट्स' के रैंचो को उद्धृत किया जा सकता है, जो कहता है कि 'ज्ञान जहां से मिले बटोर लेना चाहिये।' (चाहे मास्को विवि हो या हार्वर्ड अथवा गलगोटिया विवि।)

कृ तो अपनी ऊंची तालीम, दिल्ली सरकार में बतौर शिक्षा मंत्री के रूप में किया गया उनका चमकदार प्रदर्शन, शिक्षितों के संगठन आप की नेता होने की सारी उपलब्धियों को खाक में मिलाते हुए इन काबिल मोहतरमा ने अपनी बगल में यह कहकर एक कुर्सी खाली छोड़ दी, कि वह उनके गुरू व नेता अरविंद केजरीवाल की है। संदर्भः भरत का अजुध्या में चलाया गया खड़ाऊ राज। यानी वे नाममात्र के राजा थे। 14 वर्षों का स्टॉपगैप अरेंजमेंट– अस्थायी व्यवस्था। जब राजा राम वनवास से लौटे तो भरत ने गद्दी सौंप दी। कुछ इसी तर्ज़ पर आतिशी ने संदेश दिया है कि इस कुर्सी पर असली हक तो केजरीवाल का है। वे तो परिस्थितियों के कारण यह काम सम्हाल रही हैं– भरत की तरह अनिच्छा से। जैसे भरत 14 वर्षों से इस अपराध भाव से राज करते रहे कि वे किसी और का हक मार रहे हैं। एक शासक जो खुद को ही प्रॉक्सी मान रहा हो, क्या उससे प्रशासकीय कुशलता तथा न्याय की उम्मीद की जा सकती है? भरत ने राजा के रूप में जब काम किया होगा तो यह भाव तो उनमें भी आया ही होगा। बहरहाल, रामकथा को एक ओर रख दिया जाये। कहते हैं कि महान मराठा शासक शिवाजी ने भी अपना राज–काज अपने गुरू रामदास समर्थ के नाम से ही चलाया था। एक ओर आध्यात्मिक पुंज की प्रेरणा तो दूसरी ओर उनकी माता जीजा के मार्गदर्शन में उन्होंने जैसा भी राज किया वह राजशाही के अंतर्गत की गयी व्यवस्था ही थी।

आतिशी तो लोकतांत्रिक पार्टी की नेता हैं। केजरीवाल द्वारा पद छोड़े जाने के बाद उन्हें विधायक दल का नेता एक निर्धारित प्रक्रिया के अंतर्गत चुना गया है। बगल में एक और कुर्सी लगाकर आतिशी ने उस संविधान सम्मत प्रक्रिया पर ही पानी फेर दिया है। वैसे तो उनके पास एक नायाब मौका है कि वे अपनी कार्य कुशलता और योग्यता का परिचय दें। उनकी पार्टी कठिन दौर से गुजर रही है। एक ओर उनके असली सीएम के हाथ–पांव बांध दिये गये हैं, तो वहीं दूसरी तरफ़ दिल्ली के लेफ्टी. गवर्नर भारतीय जनता पार्टी के इशारे पर पूरी पार्टी को ही नेस्तनाबूद करने पर तुले हैं। वैसे में आतिशी के पास खुद को साबित करने का मौका है। उन्हें बचे समय में दिल्ली के बहुत से काम करने हैं और उनके पास यह भी अवसर चलकर आया है कि दिल्ली विधानसभा का अगला चुनाव उन्हीं के नेतृत्व में लड़ा जायेगा– सीएम होने के नाते। तो उन्होंने इस मौके पर अलग कुर्सी लगाकर बाकायदे ऐलान कर दिया कि आखिरकार वे हैं तो किसी के हाथों की कठपुतली ही। लड़ाई तो एलजी के हाथों की कठपुतली बनने से इंकार करने की लड़ी जा रही थी। आप एक के हाथ की कठपुतली बनने से तभी इंकार कर सकते हैं जब आप किसी की भी कठपुतली न बनें। देश में ऐसे कई उदाहरण हैं कि किसी को किसी की कृपा से कोई पद तो मिलता है, लेकिन उसे अपनी स्वतंत्र सत्ता साबित करनी होती है। आज भाजपा की इसीलिये तो आलोचना होती है कि उसने सभी को मोदी और उनके खासमखास अमित शाह के हाथों की कठपुतली बना दिया है। वे तो मजबूरी में बने हैं– आतिशी मैडम तो स्वघोषित कठपुतली बन बैठी हैं। ऐसे में उनका इकबाल कैसे कायम होगा? हो सकता है कि आतिशी ने स्वयं को निष्ठावान साबित करने के लिये ऐसा किया हो, पर यह है तो लज्जाजनक ही। पता नहीं यह आइडिया उनका खुद का था या उन्हें पार्टी नेतृत्व ने ऐसा करने के लिये निर्देशित किया था। यदि किसी ने कहा भी हो तो उन्हें मना कर देना था और ऐसे पद को स्वीकार ही नहीं करना था। सम्भवतः हाल ही में झारखंड में जो हुआ वह भी शायद आप के नेताओं को आशंकित कर गया हो। याद हो कि जेल जाने के पहले वहां के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने अपनी पार्टी के वरिष्ठ नेता चम्पई सोरेन को सीएम बना दिया था। उस वक्त तो उन्होंने कहा था कि वे हेमंत की जगह पर काम कर रहे हैं और असली सीएम हेमंत ही हैं। जेल से छूटने के बाद जब हेमंत वापस अपनी कुर्सी पर विराजमान हुए तो चम्पई ने अपने अपमान के कई किस्से सुनाते हुए दल का त्याग कर दिया और भाजपा में समा गये। आतिशी शायद आप नेताओं को आश्वस्त करना चाहती होंगी कि वे हर घड़ी हर पल इस बात को याद रखेंगी कि वे केजरीवाल की दी गयी कुर्सी पर बैठी हैं। हालांकि वे ऐसा नहीं भी करतीं तो भी यह जगजाहिर सी बात थी। सवाल तो यह है कि इस महत्वपूर्ण पद पर बैठी सीएम से बाहर के लोग, खासकर विदेश से जो आएंगे, तो उन्हें भारतीय लोकतंत्र के इस रिक्त स्थान को देखकर आश्चर्य होगा। देश को लेकर बनने वाली उनकी धारणा किस तरह की हो सकती है– इसका अंदाजा लगाया जा सकता है।

यह कुछ वैसा ही है जैसे वाराणसी के एक थाने में भैरव बाबा की कुर्सी खाली रहती है। माना जाता है कि वे ही शहर के कोतवाल हैं। उसका निरीक्षण कोई अधिकारी कभी नहीं करता। उसे देखने तक लोग थाने में जाते हैं। शिकायत करने वालों को पुलिस रोक सकती है, परन्तु दर्शन करने वालों को नहीं। आतिशी कुछ कर सकें या नहीं, लोगों को उस खाली कुर्सी के दर्शन करने से रोक नहीं सकेंगी। यह एक तरह से खुद पर उन्होंने पहरेदारी बिठा ली है। वैसे मोतीलाल वोरा को जब मध्यप्रदेश का मुख्यमंत्री बनाया गया था तब उनका मज़ाक उड़ाते हुए तत्कालीन एक बड़े पत्रकार ने लिखा था कि 'वोरा जी बड़ी सी कुर्सी होने के बावजूद उसके बिलकुल आगे के हिस्से में बैठते थे, ताकि जब भी उन्हें पद छोड़ने को कहा जाये तो उन्हें उठने में आसानी होगी।' आतिशी चाहती हैं कि उनका मज़ाक न उड़ाया जाये तो वे केजरीवाल की कुर्सी को तुरन्त हटवाएं। बाकी उनकी मर्ज़ी!

इनरव्हील क्लब ने गोद लिया सरकारी स्कूल, बच्चों की शिक्षा में करेंगी मदद

संवाद न्यूज, गोरखपुर। इनर व्हील क्लब ऑफ गोरखपुर ने हैप्पी स्कूल प्रोजेक्ट के अंतर्गत पिपरौली ब्लाक के एक सरकारी विद्यालय को गोद लिया। इस मेगा प्रोजेक्ट का उद्घाटन क्लब की अंतरराष्ट्रीय प्रेसिडेंट ममता गुप्ता ने किया। क्लब की अध्यक्ष कविता त्रिपाठी ने बताया कि विद्यालय में बच्चों के पढ़ने के लिए किताबें, फर्नीचर, पंखा, कंप्यूटर, इनवर्टर आदि जरूरी सामान दिए गए। विद्यालय के जीर्णोद्धार क्लासरूमों के सीलिंग की मरम्मत और जमीन पर टाइल लगवाकर किया गया। इस अवसर पर हनी, सरोज, सीमा, साधना, रिचा, रीना आदि मौजूद रहीं।

मेडिकल कालेज...जूनियर डाक्टरों ने फिर तीमारदारों को पीटा–डाक्टर को भी लगी चोट

गोरखपुर। मंगलवार शाम चौरी चौरा थाना क्षेत्र के सरदार नगर का रहने वाला एक व्यक्ति सड़क दुर्घटना में घायल हो गया था। रात करीब 11 बजे उसे बीआरडी मेडिकल कालेज के ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कराया गया। वहां मौजूद अंबु बैग जूनियर डॉक्टरों ने मरीज को लगा दिया और तीमारदार को नया अंबु बैग खरीद कर लाने को कहा। इसी बीत पर बहस होते–होते विवाद बढ़ गया।

बीआरडी मेडिकल कालेज के जूनियर डॉक्टरों पर फिर तीमारदारों से मारपीट का आरोप लगा है। मामला मंगलवार देर रात का है। एक घटना ट्रॉमा सेंटर तो दूसरी मेडिसिन वार्ड की है। मारपीट में एक तीमारदार की नाक फूट गई, जबकि एक जूनियर डॉक्टर को भी चोट लगी है। पीड़ित तीमारदारों ने मेडिकल कॉलेज पुलिस चौकी को सूचना दी। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच के बाद कार्रवाई की जाएगी। जानकारी के अनुसार, मंगलवार शाम चौरी चौरा थाना क्षेत्र के सरदार नगर का रहने वाला एक व्यक्ति सड़क दुर्घटना में घायल हो गया था।

रात करीब 11 बजे उसे बीआरडी मेडिकल कालेज के ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कराया गया। वहां मौजूद अंबु बैग जूनियर डॉक्टरों ने मरीज को लगा दिया और तीमारदार को नया अंबु बैग खरीद कर लाने को कहा। तीमारदार ने रुपये नहीं होने की बात कहते हुए उसी अंबु बैग से काम चलाने की बात कही।

आरोप है कि इस पर ट्रॉमा सेंटर में मौजूद जूनियर डाक्टर नाराज हो गए और तीमारदार को पीट दिया। इससे करीब आधे घंटे तक ट्रामा सेंटर में अफरातफरी का माहौल रहा। कुछ देर बाद मरीज ने दम तोड़ दिया। दूसरी तरफ, गोला थाना क्षेत्र के एक गांव का रहने वाले व्यक्ति को सर्जरी विभाग से मेडिसिन वार्ड में शिफ्ट किया गया, जहां कुछ देर बात उसकी मौत हो गई।

मृत घोषित करने के लिए जूनियर डाक्टर ईसीजी कराने के बाद उसे पोस्टमार्टम के लिए भेजना चाहते थे। इसका तीमारदारों ने विरोध किया। बात बढ़ गई और तीमारदार और जूनियर डाक्टरों में हाथापाई हो गई। इस झगड़े में एक तीमारदार की नाक फूट गई,जबकि जूनियर डॉक्टर को भी चोट आई।

इस संबंध में सीओ गोरखनाथ रवि कुमार सिंह का कहना है कि यह मामला संज्ञान में नहीं है। मेडिकल चौकी पुलिस से पूछताछ की जाएगी। इसके बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

डेढ़ करोड़ का लोन लेकर लापता हुई समूह संचालिका

गोरखपुर। एसएसपी ऑफिस पहुंचीं संध्या, सुमन, नीलम, जैनुल खातून, हीरावती, पुष्पा, किरन, मनीषा व अन्य महिलाओं ने बताया कि उनके गांव में किराये पर रहने वाली एक महिला समूह का संचालन करती थी। रुपये के लेनदेन सहित अन्य कामों के लिए वह सबके आधार कार्ड सहित अन्य दस्तावेज अपने पास रखती थी। इसका फायदा उठाकर उस महिला ने विभिन्न माइक्रो फाइनेंस कंपनियों से करीब डेढ़ करोड़ रुपये का लोन समूह की महिलाओं के नाम से ले लिए।

हरपुर बुदहट क्षेत्र के देवराडतुला गांव की महिलाओं का समूह बनाकर एक महिला विभिन्न फाइनेंस कंपनियों से करीब डेढ़ करोड़ रुपये लोन लेकर लापता हो गई है। लोन की वसूली करने कंपनी के कर्मचारी जब कर्जदार महिलाओं के घर पहुंचे तब उनको मामले की जानकारी हुई। गांव की करीब 40 महिलाओं ने एसएसपी डॉ. गौरव ग्रोवर से मिलकर कार्रवाई की मांग की। एसएसपी ने प्रकरण की जांच करके कार्रवाई का आश्वासन दिया है।

एसएसपी ऑफिस पहुंचीं संध्या, सुमन, नीलम, जैनुल खातून, हीरावती, पुष्पा, किरन, मनीषा व अन्य महिलाओं ने बताया कि उनके गांव में किराये पर रहने वाली एक महिला समूह का संचालन करती थी। रुपये के लेनदेन सहित अन्य कामों के लिए वह सबके आधार कार्ड सहित अन्य दस्तावेज अपने पास रखती थी। इसका फायदा उठाकर उस महिला ने विभिन्न माइक्रो फाइनेंस कंपनियों से करीब डेढ़ करोड़ रुपये का लोन समूह की महिलाओं के नाम से ले लिए।

कंपनी के कर्मचारी पहुंचे तो हुई लोन की जानकारी

इसकी जानकारी महिलाओं को तब हुई जब फाइनेंस कंपनियों के कर्मचारी कर्ज वसूली के लिए पहुंचने लगे। इसके बाद छह सितंबर को महिलाएं आरोपी के घर पहुंचीं। वहां लोन लेने के बारे में जानकारी ली। तब आरोपी महिला और उसके पति ने बेटी का मेडिकल कॉलेज में एडमिशन दिलाने के लिए रुपये लोन लेने की बात कही।

पीड़ितों से कहा कि उनके रुपये जल्द ही लौटा दिए जाएंगे। बाद में आरोपी महिला और उसके पति मकान में ताला बंद करके कहीं चले गए। क्षेत्र के सेमरडाढ़ी गांव में रहने वाले महिला के सहयोगी भी लापता हो गए। इसकी जानकारी महिलाओं ने हरपुर बुदहट पुलिस को दी, लेकिन कार्रवाई नहीं हुई। तब महिलाओं ने बृहस्पतिवार को एसएसपी से मिल कर अपनी पीड़ा बताई।

'बेटा तुम ये एक काम कर लो... तरक्की करेगा स्कूल'

कृतार्थ हत्याकांड में सनसनीखेज खुलासा

इसलिए हुआ मासूम का कत्ल... कातिलों ने खोले चौंकाने वाले राज

गोरखपुर,संवाददाता

हाथरस के रसगवां के डीएल पब्लिक स्कूल के छात्रावास में पढ़ने वाले कक्षा दो के 11 वर्षीय छात्र कृतार्थ की हत्या में सनसनीखेज खुलासा हुआ है। कृतार्थ की हत्या तंत्र–मंत्र के लिए हुई थी। स्कूल प्रबंधक का तांत्रिक है। उसने अपने प्रबंधक बेटे को बताया था कि बलि देने से न केवल स्कूल तरक्की करेगा बल्कि उनके परिवार पर भी कोई मुसीबत नहीं आएगी। प्रबंधक के पिता ने अपने बेटे और शिक्षक की मदद से कृतार्थ को रात में सोते वक्त हॉस्टल से उठवाया और जंगल की तरफ ले जाने लगे। इसी दौरान बच्चा जाग गया और रोने लगा। इस पर उसकी गला दबाकर हत्या कर दी गई।

बाद में प्रबंधक ने कृतार्थ के शव को अपनी गाड़ी में रखा और शव ठिकाने लगाने के लिए इधर–उधर दौड़ने लगे। जबकि कृतार्थ के पिता को फोन कर दिया कि उनके बेटे की तबीयत खराब है और डॉक्टर को दिखाने ले जा रहे हैं। इसी दौरान परिवार वालों ने सादाबाद के पास प्रबंधक की गाड़ी रोक ली। गाड़ी में कृतार्थ का शव बरामद हो गया था। सहपऊ तहसील क्षेत्र के गांव रसगवां में स्थित डीएल पब्लिक स्कूल के कक्षा दो के छात्र कृतार्थ (11) की हत्या का खुलासा बृहस्पतिवार को पुलिस ने कर दिया है।

कृतार्थ का शव 23 सितंबर को विद्यालय के

प्रबंधक दिनेश बघेल की कार में सादाबाद में मिला था। उस वक्त दिनेश बघेल ने पुलिस को बताया था कि कृतार्थ की तबीयत खराब हो गई थी और वह उसे अस्पताल लेकर जा रहा था। पहले सादाबाद दिखाया और फिर आगरा में। वहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया तो वह वहां से वापस लेकर आ रहा था। पुलिस ने भी दिनेश की कहानी को सही मान लिया और परिवार वालों की तसल्ली के लिए शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। लेकिन पोस्टमार्टम रिपोर्ट ने पूरी कहानी ही बदल डाली।

रिपोर्ट के मुताबिक, कृतार्थ की गला दबाकर हत्या की गई। पुलिस ने उसी दिन से प्रबंधक को हिरासत में रखा। लेकिन हत्या क्यों और किसने की यह साफ नहीं हो पाया। स्कूल के बच्चों के भी बयान दर्ज हुए मगर पुख्ता जानकारी नहीं मिल पाई। बाद में पता चला कि प्रबंधक दिनेश बघेल का पिता जसोदन तंत्र मंत्र करता है। इस पर दिनेश के पिता जसोदन निवासी रसगवां को हिरासत में ले लिया गया। जब कड़ाई से पूछताछ हुई तो परत दर परत खुलासा होता चला गया। एएसपी अशोक कुमार के मुताबिक, पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि जब हॉस्टल में सभी बच्चे सो गए तो स्कूल का शिक्षक राम प्रकाश सोलंकी रात को 12 बजे कृतार्थ के पास पहुंचा और सोते हुए उसे गोद में उठाकर बाहर आ गया।

इसी दौरान कृतार्थ की आंख खुल गई। वह रोने लगा। इस पर शिक्षक रामप्रकाश ने बच्चे के मुंह को दबा दिया और नीचे ले आए। इसी दौरान नीचे प्रधानाचार्य कक्ष के बाहर बिछे हुए तख्त पर लिटाकर गला दबा दिया, जिससे बच्चे की मौत हो गई।

इस घटना को अंजाम देने के दौरान कंप्यूटर शिक्षक वीरपाल उर्फ वीरू निवासी ग्राम बंका थाना मुरसान, प्रधानाचार्य लक्ष्मण सिंह पुत्र राधेश्याम निवासी बढा लहरोली घाट थाना बल्देव जनपद खड़े होकर निगरानी करते रहे।

वहीं जसोदन ने अपने प्रबंधक बेटे दिनेश बघेल को इस कृत्य के बारे में अवगत करा रखा था, जोकि बलि देने के बाद शव को गायब करने के लिए पूरी तरह से तैयार था। यह लोग शव को ठिकाने लगाने के लिए स्कूल से निकल गए जिन्हें बाद में शव के साथ ही पकड़ लिया गया था।

स्कूल के पास बलि देने की थी योजना

स्कूल से करीब 15 कदम दूर ट्यूबवेल की कोठरी में कृतार्थ की बलि देने की योजना थी। वहां रस्सी से गला दबाकर बलि देनी थी। पुलिस ने कोठरी से रस्सी, धार्मिक तस्वीरें, एक चाभी बरामद की है। तंत्र विद्या के चलते कृतार्थ की हत्या की गई है। इस मामले में विद्यालय प्रबंधक के पिता, प्रबंधक, प्रधानाचार्य, दो शिक्षकों को गिरफ्तार किया गया है। –अशोक कुमार, एएसपी

'फर्जी एनकाउंटर नाइंसाफी है...

बदमाश अनुज सिंह के मुठभेड़ में ढेर होने पर बोले अखिलेश

लखनऊ। सराफा लूटकांड के आरोपी अनुज प्रताप सिंह की एनकाउंटर में मौत के बाद अखिलेश यादव ने इस पर बयान जारी किया है और कहा कि किसी का भी फेक एनकाउंटर नाइंसाफी है। सुल्तानपुर सराफा लूटकांड के आरोपी अनुज प्रताप सिंह के पुलिस मुठभेड़ में मारे जाने के बाद मचे विवाद पर सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बयान दिया है। उन्होंने कहा कि सबसे कमजोर लोग ही एनकाउंटर को अपनी ताकत मानते हैं। किसी का भी फर्जी एनकाउंटर नाइंसाफी है। उन्होंने एक्स पर बयान जारी कर कहा कि सबसे कमजोर लोग एनकाउंटर को अपनी शक्ति मानते हैं। किसी का भी फर्जी एनकाउंटर नाइंसाफी है। हिंसा और रक्त से उत्तर प्रदेश की छवि को धूमिल करना उत्तर प्रदेश के भविष्य के विरूद्ध एक बड़ा षड्यंत्र है। आज के सत्ताधारी जानते हैं कि वो भविष्य में फिर कभी वापस नहीं चुने जाएंगे। इसीलिए वो जाते–जाते यूपी में ऐसे हालत पैदा कर देना चाहते हैं कि प्रदेश में कोई प्रवेश–निवेश ही न करे।

उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश की जागरूक जनता ने जिस तरह लोकसभा चुनाव में भाजपा को हराया है, भाजपाई उसी का बदला ले रहे हैं। जिनका खुद का कोई भविष्य नहीं होता, वहीं भविष्य बिगाड़ते हैं। बता दें कि अनुज प्रताप सिंह के एनकाउंटर के बाद उसके पिता व बहन ने भी इस पर सवाल उठाए हैं। सुल्तानपुर सराफा लूटकांड में इसके पहले मंगेश यादव की मुठभेड़ में मौत हो चुकी है।

पापी पुत्र को मिली सजा

मां से दुष्कर्म के दोषी को आजीवन कारावास खेत में किया था 'पाप', 20 माह बाद मिला इंसाफ

बुलंदशहर। आरोपी ने पशुओं के लिए चारा लाने के बहाने खेत में दुष्कर्म किया था। पीड़िता ने जब अपने छोटे बेटे को वारदात की जानकारी दी तो उन्होंने आरोपी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई थी। मां से दुष्कर्म के दोषी बेटे को कोर्ट ने सोमवार को आजीवन कारावास और 51 हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनाई है। बताया जा रहा है कि 16 जनवरी 2023 को यूपी के बुलंदशहर कोतवाली देहात के एक गांव निवासी महिला के साथ बेटे ने ही दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दिया था। आरोपी ने पशुओं के लिए चारा लाने के बहाने खेत में दुष्कर्म किया था। पीड़िता ने जब अपने छोटे बेटे को वारदात की जानकारी दी तो उन्होंने आरोपी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई थी। पीड़िता ने कोर्ट में सुनवाई के दौरान हर बार रोते हुए खुद को न्याय की मांग की। इससे दो दिन पूर्व ही बुलंदशहर में एक किशोरी से दुष्कर्म के दोषी को कोर्ट ने 20 साल की सजा सुनाई थी। कोर्ट ने सोती हुई किशोरी को उठाकर ले जाने और दुष्कर्म करने के मामले में आरोपी को पॉक्सो के तहत दोषी ठहराया था। साथ ही दोषी को 27 हजार रुपये का अर्थदंड लगाया।

13 जून 2020 को अगौता थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी पीड़ित पिता ने पुलिस को शिकायत देकर अपने रिश्ते के चाचा पर नाबालिग बेटी से दुष्कर्म करने का आरोप लगाया था। पीड़ित ने पुलिस को शिकायत देकर बताया था कि 12 जून की रात उनकी नाबालिग बेटी अपने दादा और दादी के साथ घेर में सोई थी। इसी दौरान आरोपी मौके पर पहुंचा और सोती हुई बेटी को उठाकर ले गया। आरोप है कि इसके बाद आरोपी ने किशोरी के साथ दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दिया। जब किशोरी का शोर सुनकर वह मौके पर पहुंचे तो आरोपी ने तमंचा किशोरी की कनपटी पर लगा रखा था। उनके पहुंचने पर आरोपी जान से मारने की धमकी देता हुआ मौके से फरार हो गया। पुलिस ने जांच पड़ताल के बाद आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेजा था। पुलिस की ओर से आरोपी के खिलाफ आरोप पत्र कोर्ट में दाखिल किया गया था।

नौकरी और ढेर सारा पैसा...ऐसा आफर जिसे कोई भी न कर सके मना, धर्मांतरण मामले में नया खुलासा

आगरा। मथुरा में धर्मांतरण मामले में नया खुलासा हुआ है। नौकरी और ढेर सारे पैसे का लालच देकर धर्मांतरण कराया जा रहा था। इनक नेटवर्क दिल्ली से मुंबई तक फैला हुआ है। पुलिस ने पांच आरोपी गिरफ्तार किए हैं। मथुरा में धर्मांतरण की कोशिश के मामले की जांच कर रही पुलिस टीम को व्हाट्सएप ग्रुप व अन्य दस्तावेज की जांच में कई चौंकाने वाले तथ्य मिले हैं। इसके अनुसार, गिरोह का नेटवर्क उत्तर प्रदेश ही नहीं बल्कि दिल्ली, मुंबई (महाराष्ट्र), केरल, उड़ीसा के साथ ही कई अन्य राज्यों में फैला है। यह बात भी सामने आई है कि गिरोह के सदस्य प्रार्थना सभा के माध्यम से लोगों का धर्म परिवर्तन कराते थे। थाना हाईवे की इंद्रपुरी कॉलोनी में भी शनिवार को कुछ ऐसा ही करने की कोशिश की जा रही थी। इस संबंध में तुलसी नगर की हंसराज कॉलोनी निवासी राकेश कुमार ने धर्मांतरण गिरोह पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने पुलिस को बताया कि इंद्रपुरी कॉलोनी निवासी अमर देव जाटव उन्हें पिछले एक महीने से प्रत्येक शनिवार और रविवार को अपने घर बुला रहा था। शनिवार सुबह सात बजे अमर देव ने उन्हें परिवार के साथ अपने घर बुलाया। वहां पहुंचने पर घर में प्रार्थना सभा चल रही थी। धर्मांतरण गैंग के सदस्य बेहद शातिर हैं। ये लोग गरीब लोगों को अपने जाल में फंसाते हैं। घनी आबादी वाले ऐसे इलाके में अपना ठिकाना बनाते हैं।

ग्रुप में धर्मसभा के माध्यम से दी जा रही जानकारियां

जब पुलिस ने आरोपियों के मोबाइल फोन खंगाले तो कई चौंकाने वाली जानकारियां सामने आईं। गिरोह ने हर राज्य से लिए अलग व्हाट्सएप ग्रुप बना रखा था। ग्रुप में धर्मसभा के माध्यम से धार्मिक जानकारियां दी जा रही थी। शामिल लोगों को प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित किया जा रहा था। धर्म परिवर्तन करने के बाद उन्हें क्या क्या लाभ मिलेंगे। इन सब बातों की जानकारी ग्रुपों के माध्यम से ही प्रेषित की जा रही थी। पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर गिरोह की तह तक जाने के प्रयास में लगी है।

ाामक पुस्तकें, पोस्टर मिले

मामले में नामजद अमर देव जाटव निवासी इंद्रपुरी कॉलोनी, थाना हाईवे, सैनसन सैमुअल निवासी गुरुग्राम, विकास भोई निवासी शालीमार बाग, राकेश निवासी आजादपुर और अजय सेल्वराम निवासी गौतमनगर, नई दिल्ली को गिरफ्तार किया गया है। इनके पास से धार्मिक पुस्तकें, पोस्टर आदि बरामद हुए हैं।

मंशा भांप सभा से निकले और पुलिस को दी सूचना

सभा में मौजूद लोगों को प्रलोभन देकर ईसाई धर्म अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा था। इन लोगों की मंशा भांपते ही वह वहां से निकले और कॉलोनी वासियों के साथ पुलिस को मामले की सूचना दी। राकेश की तहरीर पर पुलिस पांचों नामजद आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। पीड़ित के अनुसार, लालच देकर उसका भी धर्मांतरण करवाना चाहते थे।

ताइवानी नागरिक की भूमिका की छानबीन, पूछताछ कर छोड़ा

मामले में ताइवान के नागरिक सिंगफू को मौके से पकड़ा था। जांच में उसके खिलाफ कोई सबूत नहीं मिला। ऐसे में पूछताछ के बाद पुलिस ने उसे छोड़ दिया। प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि सिंगफू जुलाई 2023 में भारत आया था। उसके पास जुलाई 2025 तक का वीजा है। वह आरोपी सैनसान मैनुअल के साथ रह रहा था। घूमने के इरादे से मथुरा आया था। वह ताइवान की निजी कंपनी में नौकरी करता है।

राज्य कर्मचारियों के लिए खुशखबरी

दीवाली से पहले बोनस और डीए वृद्धि की घोषणा, इतनी होगी बढ़ोत्तरी

लखनऊ। यूपी के सरकारी कर्मचारियों के लिए अच्छी खबर है। राज्य कर्मियों के लिए दीवाली से पहले बोनस और डीए वृद्धि की घोषणा संभव है। इससे 15 लाख कर्मचारियों को लाभ मिलेगा। प्रदेश सरकार अपने कर्मियों के लिए दीवाली से पहले डीए और बोनस का उपहार दे सकती है। शासन के उच्चपदस्थ सूत्रों के अनुसार, संबंधित फाइल तैयार की जा रही है। बोनस का लाभ करीब 8 लाख कर्मचारियों को मिलेगा, जबकि महंगाई भत्ता (डीए) वृद्धि के दायरे में 15 लाख राज्य कर्मी और शिक्षक आएंगे। डीए को 50 प्रतिशत से बढ़ाकर 54 प्रतिशत किया जाएगा। इसके लाभ की गणना जुलाई माह से की जाएगी। वहीं, बोनस की गणना बेसिक पे और डीए के आधार पर की जाती है। पिछले साल बोनस के रूप में राज्य कर्मियों को करीब 7 हजार रुपये मिले थे। नॉन गजेटेड अफसरों को बोनस दिए जाने का प्रावधान है।

तदर्थ शिक्षकों व शिक्षा मित्रों पर लेंगे सकारात्मक निर्णय

विधान परिषद सभापति के निर्देश पर बेसिक, माध्यमिक व उच्च शिक्षा विभाग के शिक्षकों की समस्याओं पर नेता सदन व उप मुख्यमंत्री केशव मौर्या की अध्यक्षता में शनिवार को बैठक हुई। इसमें तदर्थ शिक्षकों के वेतन, तैनाती व शिक्षा मित्रों के मानदेय मामले में सकारात्मक निर्णय लेने पर सहमति बनी। बैठक में शिक्षक विधायक राज बहादुर सिंह चंदेल व स्नातक विधायक देवेंद्र प्रताप सिंह ने अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालय (एडेड कॉलेजों) के तदर्थ शिक्षकों के संबंध में 9 नवम्बर 2023 के आदेश को वापस लेने की बात कही। क्योंकि उसके बाद वेतन देने के लिए न्यायालय द्वारा निर्णय दिये जा रहें हैं किंतु विभाग इस पर कोई आदेश नही दे रहा है। उप मुख्यमंत्री ने पूछा कि ऐसे कितने लोग हैं। शिक्षक विधायक ने कहा कि लगभग 1200 लोग ही बचे है। इससे सरकार पर अलग से वित्तीय भार अलग से नहीं पड़ेगा। इस पर एक माह के अंदर निर्णय लेने की सहमत बनी । बैठक में 22 मार्च 2016 के आदेश के तहत विनियमित हुए शिक्षकों को पेंशन नहीं देने का मुद्दा उठाया। शिक्षक विधायक ने कहा कि इस पर तदर्थ, अर्हकारी सेवाएं जोड़ने के लिए कहा गया पर नहीं किया गया। उप मुख्यमंत्री ने इसका कारण पूंछा। इस पर भी एक महीने में निर्णय देने पर सहमत बनी।

बैठक में शिक्षक नेताओं ने वर्ष 1981 से 2020 तक 40000 शिक्षकों– कर्मचारियों की बिजलेंस (सर्तकता) जांच का मुद्दा उठाया। इस पर कहा गया कि जिसकी शिकायत होती है, उसे बुलाकर पूंछा जाए। अनावश्यक सभी शिक्षक – कर्मचारियों को न परेशान किया जाए। यह भी मांग की गई कि इस संबंध में शिक्षा निदेशक (माध्यमिक) इस संबंध में पत्र भी जारी करें। एमएलसी ने बताया कि राज्य शिक्षा सेवा चयन आयोग में सेवा सुरक्षा, दंड प्रक्रिया, निलंबन, अनुमोदन की नियमावली नहीं बनी। इस पर अपर मुख्य सचिव ने कहा कि यह नियमावली बन रही है उसमे चयन बोर्ड नियमावली–1998 की धारा 12,18 व 21 जोड़ने पर सहमत बनी।

सुल्तानपुर डकैती कांड

मंगेश यादव के बाद अनुज सिंह भी ढेर

लखनऊ। सराफ की दुकान में घुसकर डकैती करने वालों में अनुज प्रताप सिंह सबसे आगे था। आरोपियों में अरबाज, फुरकान, अंकित यादव और एक अज्ञात की गिरफ्तारी अभी बाकी है। सराफा डकैती कांड में शामिल अनुज प्रताप सिंह सोमवार सुबह उन्नाव के अचलगंज में एसटीएफ के साथ हुई मुठभेड़ में मारा गया। इसके पहले पांच सितंबर को एसटीएफ ने ही डकैत मंगेश यादव को मार गिराया था। डकैती में शामिल अरबाज, फुरकान, अंकित यादव और एक अज्ञात की गिरफ्तारी ही शेष बची है। इन पर भी एक–एक लाख का इनाम घोषित है। अनुज के मारे जाने के बाद फिर से राजनीतिक गलियारों में चर्चाओं का दौर शुरू हो गया है।

चौक के ठठेरीबाजार में 28 अगस्त को दिनदहाड़े सराफ भरत जी सोनी की दुकान में डकैती पड़ी थी। हथियारों से लैश पांच बदमाशों ने लगभग दो करोड़ के आभूषण लूट लिए थे। इन पांच बदमाशों में अरबाज, फुरकान, मंगेश यादव, अंकित के साथ अमेठी के जनापुर थाना मोहनगंज का अनुज प्रताप सिंह भी शामिल था। दुकान में सबसे पहले घुसने वाला बदमाश अनुज ही था जिसने उस दिन सफेद शर्ट और नीली जींस पहन रखी थी। उसी को एसटीएफ ने उन्नाव के अचलगंज में सोमवार सुबह मुठभेड़ के दौरान मार गिराया। अनुज के सिर में गोली लगी है। इसके पहले कोतवाली देहात के मिश्रपुर पुरौना गांव के पास एसटीएफ ने जौनपुर के अगरौरा थाना बक्सा के मंगेश यादव को मार गिराया था जिसके बाद सपा प्रमुख अखिलेश यादव, कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष व लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी समेत कई नेताओं ने मुठभेड़ पर सवाल उठाए थे। जाति विशेष को निशाने पर रखने की बात कही गई थी और अबअनुज सिंह एनकाउंटर को लेकर तरह–तरह की बातें कर रहे हैं।

मास्टर माइंड समेत नौ बदमाश जेल में

डकैती का मास्टरमाइंड अमेठी के भवानीनगर थाना मोहनगंज का विपिन सिंह 29 अगस्त को ही रायबरेली कोर्ट में दूसरे मामले में सरेंडर करके जेल चला गया था। अमेठी के कोतवाली नगर के सहरी भीमी निवासी सचिन सिंह और पुष्पेंद्र सिंह, हारीपुर थाना पीपरपुर के त्रिभुवन को तीन सितंबर को पुलिस मुठभेड़ में गिरफ्तार कर लिया गया था। 11 सितंबर को डकैती कांड का खुलासा किया गया था और अमेठी के सहमेमऊ थाना मोहनगंज के विनय शुक्ला, रायबरेली के नया पुरवा निवासी दुर्गेश सिंह, अमेठी के भवानीनगर थाना मोहनगंज के विवेक सिंह और आजमगढ़ के चमराडीह थाना फूलपुर के अरविंद यादव को जेल भेजा गया था। 20 सितंबर को जयसिंहपुर के मुइली गांव के पास मुठभेड़ में इनामी बदमाश जौनपुर के सिंगरामऊ निवासी अजय यादव को गिरफ्तार कर लिया गया था। इस दौरान डकैतों से लगभग ढाई किलो सोना और 30 किलो चांदी बरामद की गई।

साजिश या शरारत... उलझती जा रही एटीएस, बड़ा सवाल– कैसे कोई ट्रैक पर रख सकता है सिलिंडर

लखनऊ। यूपी और अन्य राज्यों में ट्रेनों को पलटाने की साजिश के मामलों ने सुरक्षा एजेंसियों की चिंता बढ़ा दी है। कानपुर में रेलवे की लूप लाइन के ट्रैक पर रविवार तड़के छोटा एलपीजी सिलिंडर बरामद होने के बाद गहनता से पड़ताल की जा रही है। हालांकि एटीएस अब तक इन मामलों में कोई साजिश है या शरारत, इसकी गुत्थी को सुलझा नहीं पाई है। अब सारी उम्मीदें एनआईए पर टिकी हैं। बता दें, कानपुर में बीते कुछ दिनों में इस तरह का तीसरा मामला सामने आया है। तीनों प्रकरणों में एटीएस अथवा कानपुर पुलिस कमिश्नरेट को अब तक कोई ठोस सुराग हाथ नहीं लगा है। वहीं, रामपुर में ट्रैक पर टेलीफोन का खंभा मिलने के मामले में जीआरपी ने दो नशेड़ियों को गिरफ्तार किया है। उन्होंने खंभा चोरी करने की बात कुबूली है, हालांकि उनके दावों की पड़ताल की जा रही है। पड़ोसी राज्यों में भी ऐसे मामले सामने आने पर एनआईए और आईबी की गोपनीय जांच जारी है। एनआईए के अधिकारियों को शक है कि इसमें किसी मॉड्यूल का हाथ है, जो लगातार अपने आकाओं के निर्देश पर साजिश को अंजाम देने में लगा है। आईजी एटीएस नीलाब्जा चौधरी ने बताया कि सभी प्रकरणों की जांच जारी है।

रेलवे पलटाने की साजिश: दो की जांच लटकी, तीसरी के साक्ष्य जुटाए

37 दिन के भीतर तीसरी बार रेलगाड़ी को बेपटरी करने की साजिश के बीच पुलिस के लिए मामलों की तेजी से जांच पूरी कर साजिशकर्ताओं तक पहुंचना और उन्हें सलाखों के पीछे पहुंचाना बड़ी चुनौती बन गया है। कालिंदी और साबरमती ट्रेन को बेपटरी करने की साजिश की जांच अभी तक सिरे नहीं चढ़ सकी है। कालिंदी एक्सप्रेस की जांच में जहां रेलवे की कमेटी की रिपोर्ट अभी तक नहीं आ सकी है। वहीं, साबरमती एक्सप्रेस को बेपटरी करने की कोशिश के मामले में चल रही जांच फॉरेंसिक लैब से रिपोर्ट न आने की वजह से अटकी हुई है।

यूपी के इस जिले से आतंकी कनेक्शन

मुरादाबाद। यूपी के इस जिले में एनआईए आतंकी कनेक्शन खंगालने पहुंची। टीम ने शिक्षक और टेलर से पूछताछ की, हालांकि बाद में उन्हें छोड़ दिया गया। शिक्षक ने एक परिवार को किराये पर घर दिया था। वह परिवार अचानक घर छोड गया था। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) की टीम ने मंगलवार देर शाम संभल के मियां सराय में आतंकी कनेक्शन के शक में एक परिषदीय स्कूल के शिक्षक और टेलर से पूछताछ की। पूछताछ के बाद एनआईए ने दोनों को छोड़ दिया। टेलर का बेटा आतंकी गतिविधियों के मामले में जेल में बंद है। शिक्षक से पूछताछ इसलिए की गई कि उसने एक परिवार को घर किराये पर दिया था। वह परिवार टेलर के बेटे के पकड़े जाने के बाद से ही घर छोड़कर चला गया था। मंगलवार की शाम करीब सात बजे एनआईए की टीम दोमियां सराय पहुंची और साथ में लाए दो लोगों की निशानदेही पर शिक्षक के घर में घुस गई। शिक्षक को हिरासत में लेकर कोतवाली लाया गया। इसके बाद टेलर को भी कोतवाली लाया गया।

शिक्षक और टेलर से देर रात तक पूछताछ की गई। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार शिक्षक ने एक परिवार को अपना मकान किराये पर दिया था। यह मकान टेलर के कहने पर दिया गया था। नवंबर 2023 में टेलर का बेटा आतंकी गतिविधियों में यूपी एटीएस की टीम ने गिरफ्तार किया तो वह परिवार अचानक से लापता हो गया। उस परिवार के बारे में छानबीन करने के लिए एनआईए की टीम पहुंची थी। ऐसी आशंका जताई जा रही है यह परिवार भी आतंकी गतिविधियों में शामिल था। वहीं मोहल्ले के लोगों का कहना है कि जो परिवार किराये पर रहने के लिए आया था वह कुछ ही समय रहा था। उस परिवार में दंपती और बच्चे थे। बताया कि शिक्षक विद्यालय से आने के बाद हकीम का भी काम करते हैं।

बार–बार सामने आ रहा संभल का आतंकी कनेक्शन

आतंकी गतिविधियों से बार–बार संभल जिले का कनेक्शन सामने आता है। कई बड़े आतंकी संगठनों के साथ भी संभल का नाम जुड़ चुका है। वर्ष 1998 के बाद से संभल के लोगों का नाम आतंकी गतिविधियों में सामने आता रहा है। नवंबर 2023 में आईएसआईएस से कनेक्शन में संभल के दो युवा गिरफ्तार किए गए थे। इन युवाओं पर अन्य युवाओं को आतंक की राह पर लाने का आरोप लगा था। अभी मामला विचाराधीन है और दोनों युवा जेल में बंद हैं। दिल्ली के कई थानों में भी संभल के लापता युवाओं के फोटो चस्पा हैं। एक बार फिर एनआईए के संभल में छापे से आतंकी गतिविधियों की चर्चाएं तेज हो गईं। 1998 में कई युवा अचानक संभल से लापता हो गए थे। उनकी कोई गुमशुदगी भी दर्ज नहीं हुई। कुछ समय बाद खुफिया एजेंसियों ने संभल पहुंचकर छानबीन की तो मालूम हुआ कि जो युवक लापता हुए थे, उनमें से कई ने आतंकवाद की राह चुन ली है और वह पाकिस्तान में हैं। दीपा सराय निवासी मौलाना आसिम उमर उर्फ शन्नू अलकायदा का दक्षिण एशिया प्रमुख था, जो 1998 में लापता हुआ था और वर्ष 2016 में अमेरिका की ओर से विश्व के आतंकियों की सूची जारी होने पर उसका नाम प्रकाश में आया था। मौलाना आसिम उमर उर्फ शन्नू को वर्ष 2019 में अमेरिका और अफगानिस्तान की सेना के संयुक्त ऑपरेशन में मार दिया गया था।

आतंकी गतिविधियों में शामिल होने पर सजा काट चुके

संभल के दीपा सराय निवासी मोहम्मद आसिफ और जफर मसूद आतंकी गतिविधियों में शामिल होने को लेकर सात–सात साल की सजा काट चुके हैं। यह दोनों अलकायदा की सहायक शाखा अलकायदा इन इंडियन सबकॉन्टीनेंट (एक्यूआईएस) के लिए काम करते थे। साजिश रचने के साथ ही आतंकी बनाने के लिए युवाओं को भर्ती करने का काम था। दिल्ली की पटियाला हाउस कोर्ट ने 14 फरवरी 2023 को सात वर्ष से ज्यादा की सजा सुनाई थी। वर्ष 2015 से जेल में बंद थे तो सजा सुनाए जाने के कुछ समय बाद जेल से रिहा हो गए थे।

शरजील और सईद अख्तर की दिल्ली पुलिस को अभी भी तलाश

शहर के शरजील और सईद अख्तर भी 1998 में ही लापता हुए थे। इसमें सईद अख्तर आतंकी गतिविधियों में शामिल हो गया। इसकी जानकारी वर्ष 2005 में उस समय सामने आई जब दिल्ली से खुफिया एजेंसी की टीम छानबीन करने के लिए संभल पहुंची। इसी तरह शरजील की भी तलाश की गई। शरजील का फोटो दिल्ली के थानों में चस्पा है। जिसमें शरजील के आतंकवादी होने की जानकारी लिखी है। यही कारण है कि देश की कई खुफिया एजेंसियों की निगरानी संभल में रहती है। संभल के लापता युवाओं की खोजबीन भी यह एजेंसियां करती रहती हैं।

कानपुर में चलती कार में हत्या

पिछली बार घर तक लाया गाड़ी... इस बार 200 मीटर दूर खड़ी कर फोन कर बुलाया

कानपुर । चित्रकूट दर्शन के बहाने ले जाकर परिवार को मौत के घाट उतारने की साजिश रचने वाला त्रिभुवन उर्फ चाचा बेहद शातिर है। शनिवार शाम को जब परिवार को लेने पहुंचा तो कार गुजैनी स्थित किराये के घर से करीब 200 मीटर दूर मयंक चौराहे पर खड़ी की थी। इसके बाद सूरज को फोन कर मौके पर बुलाया था। डेढ़ महीने पहले जब सूरज के परिवार को लेकर चित्रकूट गया था, तो गाड़ी घर तक लाया था। चूंकि सूरज के बगल वाले मकान में दो कैमरों के साथ ही गली के अन्य घरों और खंभों पर कैमरे लगे हैं। ऐसे में आशंका है कि कैमरे से बचने के लिए ही उसने गाड़ी दूर खड़ी की थी।

आरोपी के कमरे में पुलिस ने डाला ताला

त्रिभुवन की तलाश में रविवार को कानपुर आई हमीरपुर पुलिस की टीम ने मकान मालिक अरविंद और अन्य किरायेदारों की मौजूदगी में आरोपी के कमरे का ताला तोड़कर छानबीन की थी। तब पुलिस को आरोपी के कमरे में बिस्तर, छोटा सिलिंडर और कुछ बर्तन व भगवान की फोटो मिलीं थीं। इसके बाद पुलिस ने कमरे में अपना ताला डाल दिया है। उसी मकान में रहने वाले किरायेदार प्रशांत ने बताया कि अमन का शव मिलने से पहले हमीरपुर पुलिस एक बार पीड़ित सूरज और उसके बेटे को करीब दस मिनट के लिए घर लेकर आई थी। इसके बाद चली गई थी।

जिस कार का हत्या में हुआ इस्तेमाल, वह संजीव के बड़े भाई की

वीर सिंह की ससुराल नारायणपुर में होने की वजह से उसका आना–जाना था। यहीं पर वह संजीव के संपर्क में आ गया। संजीव गांव में रहकर खेती किसानी करता है। उसके पास एक ट्रैक्टर व एक कार है। वहीं जिस अर्टिगा कार का घटना में इस्तेमाल हुआ, वह उसके बड़े भाई दिनेश की है। दिनेश जुलाई में गांव छोड़कर दिल्ली चला गया था और वहां कपड़े का कारोबार करता है।

सट्टी का रहने वाला बताया जा रहा कल्लू

पुलिस ने एक आरोपी कल्लू को गिरफ्तार किया है। वह सट्टी का रहने वाला बताया जा रहा है। पुलिस सूत्रों के मुताबिक कल्लू भी आपराधिक किस्म का है। वह सिकंदरा क्षेत्र के त्रिभुवन उर्फ चतुर सिंह से परिचित था।

खेरेश्वर घाट पर हुआ महिला का अंतिम संसकार, पति ने दी मुखाग्नि

हमीरपुर में पोस्टमार्टम के बाद सोमवार देर रात महिला का शव लेकर पति सूरज और बेटा शिव उर्फ रामजी अपने मूल निवास बोझा ग्राम पंचायत के मदारीपुर गांव पहुंचे थे। मंगलवार सुबह करीब नौ बजे परिजन और मिलने वाले लोग शव लेकर खेरेश्वर घाट पहुंचे। पति सूरज ने अमन के शव को मुखाग्नि दी। इस मौके पर मृतका के जेठ विजय यादव, देवर वीर सिंह यादव के अलावा बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

खेत से पकड़कर संजीव को हमीरपुर ले गई थी पुलिस

अमन की हत्या के बाद पुलिस ने सोमवार रात राजपुर, सट्टी, मंगलपुर थाना क्षेत्र में आरोपियों धरपकड़ के लिए छापेमारी की। इस दौरान राजपुर क्षेत्र में हिस्ट्रीशीटर वीर सिंह के घर दबिश दी। मगर पुलिस के पहुंचने की भनक पर हिस्ट्रीशीटर भाग निकला। वहीं मंगलपुर के परौंख गांव के मजरा नारायणपुर से कार चालक संजीव कुमार को पकड़ा और हमीरपुर ले गई है। एसओ मंगलपुर संजय गुप्ता ने बताया कि हमीरपुर पुलिस संजीव को खेत से पकड़कर ले गई है।

अनुज को लेकर नया खुलासा, एनकाउंटर से पहले ही परिवार ने कर दिया था ये काम

अमेठी। उन्नाव में एनकाउंटर में मारे गए सुल्तानपुर डकैती मामले में शामिल बदमाश अनुज प्रताप सिंह को लेकर नया खुलासा हुआ है। अनुज को लेकर परिवार ने बड़ा फैसला लिया था। अपराध जगत में आने के बाद अनुज प्रताप के व्यवहार में बदलाव आया था। उन्नाव में एनकाउंटर में मारे गए अमेठी के अनुज प्रताप सिंह को लेकर चौंकाने वाली जानकारी सामने आई है। अनुज का नाम सुल्तानपुर सराफा डकैती कांड में आने के बाद से परिजनों ने भी उससे दूरी बनानी शुरू कर दी थी। उसके पिता ने अपनी संपत्ति से बेदखल कर दिया था। उसके बेदखल किए जाने की प्रकाशित सूचना सोशल मीडिया पर भी वायरल हो रही है। हालांकि अमर उजाला वायरल बेदखली सूचना की पुष्टि नहीं करता है। दरअसल विपिन व विनय के संपर्क में आने के बाद अनुज प्रताप सिंह ने अपराध का रास्ता अख्तियार कर लिया था।

गुजरात के सूरत में वारदात अंजाम देकर जेल जाने के बाद से उसके आचरण में बड़ा बदलाव आया था। सूत्रों का दावा है कि अपराध जगत में आने के बाद अनुज प्रताप के व्यवहार में बदलाव आया था। सुल्तानपुर डकैती कांड में नाम आने के बाद शायद परिजनों ने भी समझ लिया था कि अनुज अब जरायम की दुनिया से वापस नहीं आएगा। इस घटना के बाद से पुलिस उसकी सरगर्मी से तलाश कर रही थी। इन सभी गतिविधियों को देखकर अनुज को उसके पिता ने अपनी संपत्ति से बेदखल कर उससे दूरी बना ली थी। बेदखल करने की सूचना सोशल मीडिया पर वायरल है। वायरल सूचना में घोषणा करने वाले का नाम धर्मराज सिंह निवासी जनापुर पूरे ठाकुर राम तिवारी थाना मोहनगंज प्रकाशित है।

सूचना में दावा किया गया है कि अनुज प्रताप सिंह आवारा किस्म का है। जिसका चाल–चलन ठीक नहीं हैं। वह पिता से मारपीट व जान से मारने की धमकी देता है। इस बारे में अनुज प्रताप सिंह के पिता धर्मराज सिंह ने पहले तो अनुज को बेदखल करने की बात से इन्कार किया, लेकिन जब प्रकाशित सूचना का जिक्र किया गया तो बोले, जिस दिन एनकाउंटर हुआ था, उसी दिन उसे बेदखल करके आए थे। उन्होंने एनकाउंटर पर सवाल तो उठाए, लेकिन कहा कि अब मेरा बेटा चला गया, हम कोई कार्रवाई नहीं चाहते हैं।

कम से कम सरकार को एक मौका तो देना चाहिए था

बेटे के एनकाउंटर को लेकर धर्मराज सिंह ने कहा कि सरकार जो चाहती थी। वह हो गया। बोले, तकलीफ सिर्फ इस बात है कि एक मुकदमा था, कम से कम सरकार को एक मौका तो देना चाहिए थे सुधरने का। 35–40 मुकदमे वाले घूम रहे हैं। मोहनगंज थाने में अभी तक अनुज के खिलाफ 107/16 तक का एक मामला भी नहीं है। बस इसी बात का दुख है कि सरकार को एक मौका देना चाहिए था।

पुलिस चौकसी के बीच हुआ अनुज का अंतिम संस्कार

मुठभेड़ में मारे गए सुल्तानपुर डकैती कांड के आरोपी अनुज प्रताप सिंह का मंगलवार की दोपहर पैतृक गांव जनापुर में अंतिम संस्कार कर दिया गया है। गांव में मातमी सन्नाटा छाया हुआ है। इस दौरान गांव में भारी पुलिस बल तैनात रहा। एहतियातन अभी भी गांव में पुलिस तैनात है। मोहनगंज थाना क्षेत्र के जनापुर गांव निवासी अनुज प्रताप सिंह उन्नाव जनपद में एसटीएफ से मुठभेड़ में मारा गया था। वह सुल्तानपुर सराफा कारोबारी के यहां पड़ी डकैती का आरोपी था। पोस्टमार्टम के बाद सोमवार देर शाम अनुज का शव गांव लाया गया था। गांव में रात में भी पुलिस तैनात की गई थी। मंगलवार को दोपहर परिजनों ने उसके शव का अंतिम संस्कार कर दिया। उसकी शव यात्रा में तमाम लोग शामिल हुए। इस घटना को लेकर लोग कुछ बोलने को तैयार नहीं हैं।

घटना को लेकर कुछ लोगों में नाराजगी भी दिखी। कई लोग दबी जुबान कह रहे थे कि अनुज पर चंद मुकदमे थे। कई अन्य अपराधियों पर कई केस हैं, फिर भी उन पर ऐसी कार्रवाई नहीं हो रही है। गांव में सन्नाटा छाया है।

एक–दो घरों के बाहर कुछ लोग बैठे नजर आए। सभी आपस में इस घटना को लेकर चर्चा कर रहे थे, लेकिन इस बाबत पूछने पर अधिकतर लोग या तो चुप्पी साध ले रहे थे या फिर घटना को गलत बता रहे थे।

शव के अंतिम संस्कार को लेकर पुलिस ने भी तैयारी कर रखी थी। शव जब घर से निकला तो गांव में काफी पुलिस बल लगा दिया गया। हालांकि परिजनों ने शांतिपूर्ण ढंग से शव का अंतिम संस्कार कर दिया।

एसओ राकेश सिंह का कहना है कि अनुज के शव का शांतिपूर्ण ढंग से अंतिम संस्कार किया गया है। एहतियात के तौर पर कुछ पुलिस कर्मियों को गांव में तैनात किया गया है।

घोटाला : गाड़ी 5 लाख की, मरम्मत पर 20 लाख खर्चे, डीजल–पेट्रोल में खेल, नेताओं की कारों में डलावाया जाता है तेल

मेरठ। मेरठ नगर निगम के वाहन डिपो में करोड़ों का घोटाला सामने आया है। जिन गाड़ियों की कीमत पांच लाख रुपये है उनकी मरम्मत के नाम पर 20 लाख रुपये का खर्च दिखाया गया है। मेरठ नगर निगम के वाहन डिपो में करोड़ों का घोटाला हो रहा है। पांच–पांच लाख कीमत की गाड़ियों पर मरम्मत के नाम पर 20–20 लाख रुपया खर्च दर्शाया गया है। डीजल व पेट्रोल में भी बड़ा खेल है। मुख्य नगर लेखा परीक्षक की गोपनीय जांच में घोटाले की परतें दर परतें खुलती जा रही हैं। निगम के दिल्ली रोड डिपो में 90 वाहन, सूरजकुंड डिपो में 88 और कंकरखेड़ा डिपो में 88 वाहन हैं। इसके अलावा महानगर में 73 वार्डों से डोर–टू–डोर कूड़ा उठाने वाली बीवीजी कंपनी को करीब 280 वाहन निगम ने अलग से दिए हुए हैं। डिपो के 250 वाहनों की मरम्मत में निगम ने 2024–25 में 700 लाख का बजट रखा है।

दिल्ली वाहन डिपो ने निर्धारित बजट खत्म कर दिया और पुनरीक्षित बजट का प्रस्ताव रखकर करीब इस वर्ष करीब 2.50 करोड़ 10 महीने में खर्च कर दिया, जबकि सूरजकुंड वाहन डिपो में 46 लाख और कंकरखेड़ा डिपो में 48 लाख रुपया शेष बचा है। निगम के वाहनों में डीजल–पेट्रोल का खर्च करने का बजट अलग है, जोकि 2100 लाख है।

वाहनों में डीजल–पेट्रोल फूंकना भी सबसे ज्यादा दिल्ली डिपो का बताया गया है। दिल्ली वाहन डिपो में बड़ा भ्रष्टाचार हो रहा है, इसकी शिकायत करीब 45 दिन पहले हुई थी। इसकी गोपनीय जांच मुख्य नगर लेखा परीक्षक अमित भार्गव को दी गई। बताया गया कि दिल्ली रोड वाहन डिपो की जांच पूरी हो गई, जबकि कंकरखेड़ा और सूरजकुंड वाहन डिपो की जांच अभी जारी है। जांच रिपोर्ट वाहन डिपो में करोड़ों का घोटाला होना सामने आया है।

दिल्ली डिपो में जिन वाहनों की कीमत पांच लाख है, उन पर 20 लाख रुपये मरम्मत में खर्चा होना दर्शाया गया। ऐसे इक्का–दुक्का वाहन ही नहीं, बल्कि दस से ज्यादा वाहन मिले हैं। डीजल–पेट्रोल भी निजी लोगों के वाहनों में डलवाने की बात सामने आई है। कई नेताओं के नाम भी सामने आए हैं।

केजरीवाल के भागवत से सवाल

बेईमानी से सत्ता हासिल करना, क्या RSS ने ऐसी BJP की कल्पना की थी?, लिखी चिट्ठी

दिल्ली–एनसीआर। केजरीवाल ने पत्र के माध्यम से पूछा कि भाजपा वो पार्टी है जो आरएसएस की कोख से पैदा हुई। ये आरएसएस की जिम्मेदारी है कि यदि भाजपा पथ भ्रमित हो तो उसे सही रास्ते पर लाए। क्या आपने कभी प्रधानमंत्री को ये सब गलत काम करने से रोका? दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत को चिट्ठी लिखकर 5 सवाल पूछे हैं। उन्होंने चिट्ठी में कहा कि **ED&CBI** की धमकी देकर दूसरी पार्टी के नेताओं को तोड़ा जा रहा है। दूसरी पार्टियों की सरकारों को गिराया जा रहा है। क्या इस तरह से चुनी हुई सरकारें गिराना देश और देश के लोकतंत्र के लिए सही है?

अरविंद केजरीवाल ने लिखा, 'मैं यह पत्र एक राजनैतिक पार्टी के नेता की हैसियत से नहीं लिख रहा हूं। बल्कि इस देश के एक सामान्य नागरिक के तौर पर लिख रहा हूं। आज देश के हालात को लेकर मैं बहुत चिंतित हूं। जिस दिशा में भाजपा की केंद्र सरकार देश और देश की राजनीति को ले जा रही है, यह पूरे देश के लिए हानिकारक है। अगर यही चलता रहा तो हमारा लोकतंत्र खत्म हो जाएगा, हमारा देश खत्म हो जाएगा। पार्टियां तो आती–जाती रहेंगी, चुनाव आते–जाते रहेंगे, नेता आते–जाते रहेंगे, लेकिन भारत देश हमेशा रहेगा। इस देश का तिरंगा आसमान में गर्व से हमेशा लहराए, ये सुनिश्चित करना हमारी सबकी ज़िम्मेदारी है।

केजरीवाल ने पत्र में पूछे ये सवाल

1. देशभर में तरह–तरह के लालच देकर या फिर **ED&CBI** की धमकी देकर दूसरी पार्टी के नेताओं को तोड़ा जा रहा है, उनकी पार्टियों को तोड़ा जा रहा है और दूसरी पार्टियों की सरकारों को गिराया जा रहा है। क्या इस तरह से चुनी हुई सरकारें गिराना देश और देश के लोकतंत्र के लिए सही है? किसी भी तरह बेईमानी करके सत्ता हासिल करना, क्या आपको या आरएसएस को यह मंजूर है?

2. देश के कुछ नेताओं को खुद प्रधानमंत्री और गृह मंत्री अमित शाह ने सार्वजनिक मंच से भ्रष्टाचारी कहा और उसके कुछ दिन बाद ही उन्हें भारतीय जनता पार्टी में शामिल करा लिया। जैसे 28 जून 2023 को पीएम ने एक सार्वजनिक भाषण में एक पार्टी और उनके एक नेता पर 70 हजार करोड़ के घोटाले का आरोप लगाया। उसके कुछ दिन बाद ही उस पार्टी को तोड़ कर उसी नेता के साथ सरकार बना ली और उसी नेता को, जिसे कल तक 'भ्रष्ट कहते थे, उसे उपमुख्यमंत्री बना दिया। ऐसे कई मामले हैं जब दूसरी पार्टियों के भ्रष्ट नेताओं को भाजपा में शामिल करवाया गया। क्या आपने या आरएसएस कार्यकर्ताओं ने ऐसी भाजपा की कल्पना की थी? क्या ये सब देखकर आपको कष्ट नहीं होता?

3- भाजपा वो पार्टी है जो आरएसएस की कोख से पैदा हुई। ये आरएसएस की जिम्मेदारी है कि यदि भाजपा पथ भ्रमित हो तो उसे सही रास्ते पर लाए। क्या आपने कभी प्रधानमंत्री को ये सब ग़लत काम करने से रोका?

4. जेपी नड्डा ने लोकसभा चुनाव के दौरान कहा कि भाजपा को अब आरएसएस की जरूरत नहीं है। आरएसएस एक तरह से भाजपा की मां है। क्या बेटा इतना बड़ा हो गया कि मां को आंखें दिखाने लगा है? मुझे पता चला है कि जेपी नड्डा के इस बयान ने हर आरएसएस कार्यकर्ता को बेहद आहत किया। देश जानना चाहता है कि उनके बयान से आपके दिल पर क्या गुजरी?

5. आप सबने मिलकर कानून बनाया कि 75 साल की उम्र के बाद भाजपा नेता रिटायर हो जाएंगे। इस कानून का खूब प्रचार किया गया और इसी कानून के तहत लालकृष्ण आडवाणी और मुरली मनोहर जोशी जैसे कई कद्दावर भाजपा नेताओं को रिटायर किया गया। पिछले 10 वर्षों में इस कानून के तहत अन्य कई भाजपा नेताओं को रिटायर किया गया जैसे खंडूरी, शांता कुमार, सुमित्रा महाजन आदि। अब अमित शाह का कहना है कि वो कानून पीएम मोदी पर लागू नहीं होगा। क्या इस पर आपकी सहमति है कि जिस कानून के तहत लालकृष्ण आडवाणी को रिटायर किया गया, वो कानून अब पीएम मोदी पर लागू नहीं होगा? क्या सबके लिए कानून समान नहीं होना चाहिए? केजरीवाल ने आगे लिखा कि आज हर भारतवासी के मन में ये प्रश्न कौंध रहे हैं। मुझे पूरी उम्मीद है कि आप इन सवालों पर विचार करेंगे और लोगों को इन सवालों के जवाब देंगे।

भारत पड़ोसी देशों के राजनीतिक कदम नियंत्रित नहीं करना चाहता', श्रीलंका और बांग्लादेश पर जयशंकर

वॉशिंगटन,एजेंसी। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि जब कोलंबो बहुत गहरे आर्थिक संकट का सामना कर रहा था तब भारत आगे आया। स्पष्ट कहें तो और कोई आगे नहीं आया। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों पर बात की। उन्होंने विश्वास जताया कि श्रीलंका और बांग्लादेश के साथ भारत के संबंध सकारात्मक और रचनात्मक बने रहेंगे। उन्होंने कहा, 'मैं आपसे आग्रह करूंगा कि आप इसे लेकर निर्धारक नहीं बनें। ऐसा नहीं है कि भारत हर पड़ोसी के प्रत्येक राजनीतिक कदम को नियंत्रित करना चाहता है।

यह इस तरह से काम नहीं करता है। यह सिर्फ हमारे लिए ही नहीं, बल्कि किसी और के लिए भी काम नहीं करता।'जयशंकर ने मंगलवार को न्यूयॉर्क में यहां के एशिया सोसाइटी और एशिया सोसाइटी पॉलिसी इंस्टीट्यूट द्वारा आयोजित 'इंडिया, एशिया एंड द वर्ल्ड' नामक एक कार्यक्रम में बातचीत के दौरान यह बात कही।

आधे से ज्यादा खाली सीटों के साथ दौड़ रही मेरठ–लखनऊ वंदे भारत एक्सप्रेस

बरेली। देशभर में अलग–अलग रूटों पर दौड़ रहीं 60 वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों में ऑक्यूपेंसी के मामले में 22490 मेरठ–लखनऊ वंदे भारत एक्सप्रेस 56वें स्थान पर है। इस ट्रेन का संचालन एक सितंबर से शुरू किया गया है। वहीं, 26 मई से चलाई गई 22545 लखनऊ–देहरादून वंदे भारत एक्सप्रेस 31वें स्थान पर है। ये दोनों ट्रेनें बरेली होकर चलती हैं। मेरठ–लखनऊ वंदे भारत एक्सप्रेस आधे से ज्यादा खाली दौड़ रही है। कुल 60 में से 17 ट्रेनों में शत–प्रतिशत सीटें बुक हो रही हैं। लखनऊ–देहरादून वंदे भारत एक्सप्रेस की चेयरकार श्रेणी की 474 सीटों में औसतन 88.4 फीसदी सीटें बुक हो रहीं और 55 सीटें खाली रह जा रही है। मेरठ–लखनऊ वंदे भारत एक्सप्रेस में महज 24 फीसदी सीटें ही बुक हो रही हैं।

यह ट्रेन रोजाना औसतन 360 खाली सीटों के साथ दौड़ रही है। यात्रियों की पसंद के मामले में मेरठ–लखनऊ वंदे भारत काफी पिछड़ गई है। अधिकारियों का कहना है कि इस ट्रेन के विस्तार पर विचार किया जा रहा है। लखनऊ–देहरादून वंदे भारत का प्रदर्शन ठीक माना जा रहा है।

अन्य ट्रेनों की स्थिति

यूपी से गुजरने वाली 22458 देहरादून–आनंद विहार, 22345 पटना–लखनऊ, 20887 रांची–वाराणसी वंदे भारत में 100 फीसदी सीटें बुक हो रही हैं। 22439 नई दिल्ली–कटड़ा, 22426 आनंद विहार–अयोध्या, 22436 नई दिल्ली–वाराणसी वंदे भारत में 90 से 99 फीसदी तक सीटें बुक हो रही हैं।

लखनऊ–देहरादून वंदे भारत के मुकाबले 13 ट्रेनें ही ऐसी हैं, जिनमें 88 फीसदी से ज्यादा सीटें बुक हो रही हैं। हाल ही में शुरू की गई 20829 उदयपुर–आगरा वंदे भारत में सिर्फ 17 फीसदी सीटें बुक हो रही हैं। 22415 वाराणसी–नई दिल्ली में 40 और 22500 वारणसी–देवघर वंदे भारत में 70 फीसदी से ज्यादा सीटें बुक हो रही हैं।

ये है वजह

मेरठ से लखनऊ के लिए 22453 राज्यरानी एक्सप्रेस, 14242 नौचंदी एक्सप्रेस का संचालन प्रतिदिन होता है। वंदे भारत एक्सप्रेस मंगलवार को छोड़कर सप्ताह में छह दिन चलाई जाती है। वंदे भारत एक्सप्रेस यह दूसरी तय करने में 7:10 घंटे, राज्यरानी एक्सप्रेस आठ और नौचंदी एक्सप्रेस 9:10 घंटे लेती है।

वंदे भारत और राज्यरानी के आवागमन के समय में भी महज 50 मिनट का अंतर है। वंदे भारत में चेयरकार का किराया 1,355 रुपये, जबकि राज्यरानी एक्सप्रेस में चेयरकार का किराया 645 रुपये है। ऐसे में यात्री वंदे भारत के स्थान पर राज्यरानी को ज्यादा तवज्जो दे रहे हैं।

वंदे भारत में चेयरकार का किराया 1,355 रुपये, जबकि राज्यरानी एक्सप्रेस में चेयरकार का किराया 645 रुपये है।

यात्रियों की पसंद के मामले में मेरठ–लखनऊ वंदे भारत एक्सप्रेस पिछड़ गई है। इस ट्रेन का संचालन एक सितंबर से शुरू हुआ। सप्ताह में मंगलवार को छोड़कर छह दिन संचालन होता है, लेकिन यह ट्रेन रोजाना औसतन 360 खाली सीटों के साथ दौड़ रही है।

यूपी की तर्ज पर हिमाचल में भी हर भोजनालय

फास्ट फूड कॉर्नर और रेहड़ी पर लगेगी मालिक की आईडी

शिमला। हर भोजनालय और फास्ट फूड कॉर्नर, रेहड़ी पर मालिक की आईडी लगाई जाएगी। शहरी विकास मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने फेसबुक पर पोस्ट डालकर यह जानकारी दी। हिमाचल में भी यूपी की तर्ज पर हर भोजनालय और फास्ट फूड कॉर्नर, रेहड़ी पर मालिक की आईडी लगाई जाएगी, ताकि लोगों को किसी भी तरीके की परेशानी न हो। इसके लिए शहरी विकास एवं नगर निगम की बैठक में निर्देश जारी कर दिए गए हैं। शहरी विकास मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने फेसबुक पर पोस्ट डालकर यह जानकारी दी। साथ ही उन्होंने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ओर से इस संबंध में लिए गए फैसले की खबर को भी पोस्ट किया है। गौरतलब है कि मंगलवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने खानपान की वस्तुओं में मानव अपशिष्ट और गंदी चीजों की मिलावट करने वालों के खिलाफ कठोरतम कार्रवाई के निर्देश दिए थे।

देश के विभिन्न क्षेत्रों में घटी ऐसी घटनाओं का संज्ञान लेते हुए मंगलवार को एक उच्च स्तरीय बैठक में मुख्यमंत्री योगी ने प्रदेश के सभी होटलों, ढाबों और रेस्टोरेंट आदि संबंधित प्रतिष्ठानों की गहन जांच, सत्यापन आदि के भी निर्देश दिए हैं साथ ही आम जन की स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए नियमों में आवश्यकतानुसार संशोधन के निर्देश दिए। कहा कि हाल के दिनों में देश के विभिन्न क्षेत्रों में जूस, दाल और रोटी जैसी खान–पान की वस्तुओं में मानव अपशिष्ट, अखाद्य और गंदी चीजों की मिलावट की घटनाएं देखने को मिली हैं। ऐसी घटनाएं वीभत्स हैं और आम आदमी के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाली हैं। ऐसे कुत्सित प्रयास कतई स्वीकार नहीं किया जा सकते।

राजधानी में इसी साल लागू कर दी जाएगी न तहबाजारी नीति

शिमला में इसी साल नई तहबाजारी नीति लागू हो जाएगी। शहरी विकास मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने नगर निगम को इस बारे में निर्देश जारी कर दिए हैं। 31 दिसंबर तक नई तहबाजारी नीति लागू करने की प्रक्रिया पूरी करने को कहा है। प्रदेश सचिवालय में तहबाजारियों के मुद्दे पर हुई बैठक की अध्यक्षता करते हुए शहरी विकास मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने नगर निगम की ओर से तैयार नई तहबाजारी नीति की भी समीक्षा की। उन्होंने कहा कि प्रदेश में बाहरी राज्यों से आने वाले तहबाजारियों को लेकर सवाल उठ रहे हैं। इसके बाद सरकार ने एक कमेटी बनाई है जो चर्चा करेगी कि कैसे तहबाजारियों को बसाया जा सकता है। इनके लिए क्या नियम हो सकते हैं, इस पर भी चर्चा की जा रही है।

शिमला में 750 पंजीकृत जबकि 309 गैर पंजीकृत तहबाजारी

नगर निगम को निर्देश दिए कि अगले माह से शहर में ब्लू लाइन लगाकर तहबाजारियों के लिए स्थान चिह्नित की जाए। इसके अलावा जो पंजीकृत तहबाजारी हैं, उन्हें यह स्थान आवंटित किए जाएं। मंत्री ने विकलांगों, विधवा महिलाओं, आर्थिक रूप से कमजोर लोगों और आरक्षित वर्ग के लोगों को भी दुकानें आवंटित करने में प्राथमिकता देने को कहा है। नगर निगम के रिकॉर्ड के अनुसार शहर में 1059 तहबाजारी हैं। इनमें 750 पंजीकृत जबकि 309 गैर पंजीकृत तहबाजारी हैं। हालांकि, हाल ही में किए गए सर्वे में करीब 540 तहबाजारी ही मिले हैं। शहरी विकास मंत्री ने कहा कि सर्वे के बाद से कई तहबाजारी गायब है। नगर निगम को इसे चेक करना चाहिए। बैठक में जोन के हिसाब से तहबाजारियों का किराया तय करने को लेकर भी चर्चा हुई।

कृतार्थ का कत्ल

छात्र की हत्या में स्कूल के ही किसी शिक्षक का तो नहीं हाथ... संदेह बढ़ा रहे पांच सवाल

:हाथरस। हाथरस में कक्षा दो के छात्र कृतार्थ की हत्या क्यों और किसने की इन सवालों का जवाब 48 घंटे बाद भी साफ नहीं हो सका है। प्रबंधक पुलिस हिरासत में है। हॉस्टल में रहने वाले 12 बच्चों के बयान भी दर्ज किए गए हैं। अब तक की जांच पड़ताल में स्कूल का एक शिक्षक शक के दायरे में है। यह शिक्षक स्कूल में ही रहता था और घटना वाले दिन भी वहीं पर था। इसकी कुछ गतिविधियां भी ऐसी मिलीं हैं कि पुलिस का शक लगातार बढ़ता जा रहा है। हाथरस जनपद के कस्बा सहपऊ के गांव रसगवां में स्थित डीएल पब्लिक स्कूल के हॉस्टल में रहकर पढ़ रहा गांव तुरसेन निवासी श्रीकृष्ण का बेटा कृतार्थ कक्षा दो का छात्र था। हालांकि पहले तो माना जा रहा था कि रविवार की रात को कृतार्थ की तबीयत बिगड़ी और उसकी मौत हो गई।

लेकिन पोस्टमार्टम रिपोर्ट ने पूरी थ्योरी ही बदल डाली। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के मुताबिक, बच्चे की हत्या गला दबाकर की गई। उसके गले पर निशान भी मिले। पोस्टमार्टम रिपोर्ट सामने आते ही पुलिस ने स्कूल प्रबंधक दिनेश बघेल को हिरासत में ले लिया। बच्चे का शव भी उसकी ही गाड़ी में मिला था। प्रबंधक ने पुलिस को बताया था कि बच्चे की तबीयत बिगड़ने की सूचना पर वह रात को स्कूल में पहुंचा था और फिर यथार्थ को लेकर पहले सादाबाद के अस्पताल में गया और फिर आगरा।

@ आम्रपाली दूबे और निरहुआ

साउथ इंडिया की हसीनाएं

साउथ के वर्क कल्चर पर जूनियर एनटीआर की दोटूक

एंटरटेनमेंट डेस्क। जूनियर एनटीआर इन दिनों अपनी बहुप्रतीक्षित फिल्म 'देवरा' को लेकर लगातार सुर्खियां बटोर रहे हैं। इस फिल्म में पहली बार जूनियर एनटीआर और जान्हवी कपूर की रोमांटिक जोड़ी को देखने के लिए प्रशंसक बेकरार हैं। कोराटाला शिवा की निर्देशित यह फिल्म 27 सितंबर की निर्धारित रिलीज तिथि पर जल्द ही रिलीज होने वाली है। अब हाल ही में, अभिनेता ने 'देवरा' और 'जिगरा' के क्रॉस–प्रमोशनल इवेंट के दौरान जूनियर एनटीआर ने साउथ फिल्म इंडस्ट्री में वर्क कल्चर के बारे में खुलकर बात की है। आइए जानते हैं कि उन्होंने क्या कहा है। इस इवेंट में करण जौहर और आलिया भट्ट से बातचीत करते हुए, आरआरआर अभिनेता ने दावा किया कि साउथ की फिल्में अव्यवस्थित तरीके से बनाई जाती हैं। आगे बताते हुए, अभिनेता ने खुलासा किया कि जबकि हर कोई खुद से अपना अच्छा प्रदर्शन करता है तो टीम वर्क प्लानंस को फॉलो करना बंद कर देती है और अपने अनुसार काम करती है।

जूनियर एनटीआर ने आगे कहा, "बहुत ज्यादा तैयारी करने से आपको खुद को एक्सप्लोर करने का मौका नहीं मिलता। साउथ फिल्मों के सेट को हमेशा अव्यवस्थित तरीके से व्यवस्थित किया जाता है। जैसे, अगर प्रिंट कल आने हैं, तो टीम फिर भी एक कुछ और समय मांगेगी क्योंकि वे एडिट में कुछ बदलाव करना चाहते हैं। समय बीतता जाता है और प्रिंट डिलीवरी होने हैं, लेकिन आप अभी भी फिल्म पर काम कर रहे हैं।" यही नहीं, अभिनेता ने आगे कहा कि साउथ की फिल्मों के निर्माता और क्रू अक्सर शूटिंग के एक लंबे दिन की तैयारी करने से चूक जाते हैं और इसके बजाय आराम करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वे सिर्फ गड़बड़ वाली परिस्थितियों में ही अभिनेता के रूप में अच्छा प्रदर्शन कर पाते हैं। बता दें कि 'देवरा' का निर्माण युवासुधा आर्ट्स और एनटीआर आर्ट्स द्वारा किया गया है। संगीत रचना अनिरुद्ध रविचंदर द्वारा की गई है। यह फिल्म 27 सितंबर 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

'फूल' को फिल्म के लिए छोड़नी पड़ी थी 11वीं की परीक्षा

अभी 12वी कक्षा में हैं नितांशी गोयल
फिल्म देखने के बाद टीचर ने की तारीफ
फिल्म में निभाया था फूल कुमारी का किरदार

@ नितांशी गोयल

लापता लेडीज की फूल कुमारी यानी नितांशी गोयल इस समय 12वीं कक्षा में हैं और कक्षमर्स से पढ़ाई कर रही हैं। उनकी फिल्म की अक्षस्कर में एंट्री हो चुकी है। पिछले दिनों एक्ट्रेस ने एक इंटरव्यू में बताया था कि जब वो 11वीं कक्षा में थीं जो उन्हें अपने एग्जाम छोड़ने पड़े थे क्योंकि वो फिल्म के प्रमोशन में व्यस्त थीं ।

एंटरटेनमेंट डेस्क। लापता लेडीज की पूरी कास्ट और क्रू के लिए जश्न का समय है। उनकी फिल्म को आधिकारिक तौर पर ऑस्कर 2025 के लिए चुना गया है। निर्माताओं से लेकर कलाकारों और अन्य सदस्यों हर कोई इस खबर से बहुत खुश है। सभी को उम्मीद है कि फिल्म सफल होगी। फिलहाल हम और आप तो अभी ऑस्कर मिलने का इंतजार ही कर सकते हैं लेकिन क्या आपको पता है कि इस फिल्म के लिए एक्ट्रेस नितांशी गोयल को अपनी पढ़ाई दांव पर लगानी पड़ी थी?

नितांशी को छोड़नी पड़ी थी परीक्षा

आज आपको इस फिल्म से जुड़ा ये किस्सा सुनाएंगे। फिल्म में स्पर्श श्रीवास्तव ने दीपक, नितांशी गोयल ने फूल और प्रतिभा रांटा ने जया का किरदार निभाया है। नितांशी को फिल्म के प्रमोशन के लिए 11वीं की परीक्षा छोड़नी पड़ी थी।

पवन कल्याण–कार्तिके बीच विवाद सुलझने के बाद सूर्या ने दी प्रतिक्रिया

एंटरटेनमेंट डेस्क। हाल ही में पवन कल्याण ने अभिनेता कार्ति के 'लड्डू' पर दिए बयान पर गुस्सा जाहिर किया था। हालांकि, बाद में अभिनेता ने इसको लेकर माफी मांग ली थी। अब मुद्दा सुलझने के बाद सूर्या ने पवन कल्याण की पोस्ट पर अपनी प्रतिक्रिया दी है। अभिनेता कार्ति के तिरुपति के लड्डू पर दिए गए बयान के बाद अभिनेता और आंध्र प्रदेश के उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण नाराज हो गए थे। इसके बाद कार्ति ने माफी भी मांगी थी, जिसे स्वीकार करते हुए पवन कल्याण ने उन्हें आगामी फिल्म मेयाझगन के लिए उन्हें शुभकामनाएं दीं। साथ ही, उन्होंने इस पोस्ट में सुपरस्टार सूर्या को टैग भी किया।

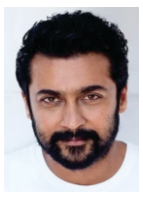

सूर्या ने कहा धन्यवाद

सूर्या ने भी कुछ ही समय बाद इस पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए पवन कल्याण को उनकी शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद दिया। हालांकि, उन्होंने कार्ति और पवन कल्याण के बीच के मुद्दे कुछ भी नहीं लिखा। सूर्या ने पोस्ट के जवाब में लिखा, "आपकी हार्दिक शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद सर!" कार्ति ने भी पवन की पोस्ट का जवाब देते हुए उन्हें उनकी शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद दिया। गौरतलब है कि आगामी फिल्म, मेयाझगन/सत्यम सुंदरम के प्रचार कार्यक्रम के दौरान कार्ति से जब तिरुपति के लड्डू बनाने में जानवरों की चर्बी के इस्तेमाल के दावों पर टिप्पणी करने के लिए कहा गया तो अभिनेता ने इसे संवेदनशील मुद्दा कहकर सवाल को टालने की कोशिश की। हालांकि, इस दौरान वह इस हंस पड़े। यही बात पवन कल्याण को पसंद नहीं आई और उन्होंने अभिनेता को सख्त हिदायत दे दी। प्रेस से बात करते हुए उन्होंने कार्ति को उनके व्यवहार के लिए खरी–खोटी सुनाई। इसके बाद कार्ति ने एक्स पर उनसे औपचारिक रूप से माफी मांगी।

सिकंदर के लिए चल रही है कड़ी तैयारी
58 साल की उम्र में भी काफी फिट हैं सलमान

58 की उम्र में भी नहीं कम हुआ जलवा

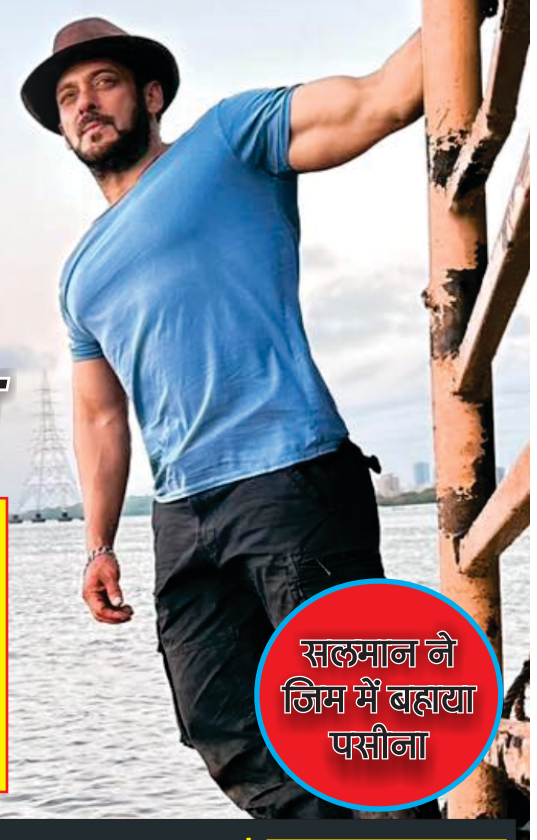

सलमान ने जिम में बहाया पसीना

एंटरटेनमेंट डेस्क, । फिल्म इंडस्ट्री के सबसे फिट एक्टर के बारे में जब भी जिक्र किया जाए तो उसमें सलमान खान का नाम जरूर लिया जाता है। 58 साल की उम्र में भी सलमान अपनी सॉलिड फिटनेस के लिए जाने जाते हैं। मौजूदा समय में वह अपनी अपकमिंग फिल्म सिकंदरके लिए जीतोड़ मेहनत कर रहे हैं और इसकी एक झलक उन्होंने बीते रात सोशल मीडिया पर दिखाई है, जब जिम में भाईजान जमकर पसीना बहाते दिखे हैं। आइए एक नजर सलमान की इस लेटेस्ट तस्वीर पर डालते हैं।

सलमान खान इंडस्ट्री के वो अभिनेता हैं जो अपनी सालिड फिटनेस के लिए काफी जाने जाते हैं। इन दिनों वह अपनी अपकमिंग फिल्म सिकंदर की तैयारियों में लगे हुए हैं। इस बीच सोशल मीडिया पर उनकी एक लेटेस्ट तस्वीर सामने आई है जिसमें वह जिम में पसीना बहाते दिख रहे हैं और उनके पीठे दीवार पर सिकंदर का नाम लगा हुआ नजर आ रहा है।

खेल मंत्री मांडविया ने शतरंज विजेताओं को किया सम्मानित

भारत के पुरुष और महिला शतरंज खिलाड़ियों ने इतिहास रचते हुए 45वें शतरंज ओलंपियाड में विजेता बनने का गौरव हासिल किया था।

खेल मंत्री मांडविया से मिले शतरंज विजेता –

स्पोर्ट्स डेस्क। केंद्रीय मंत्री मनसुख मांडविया ने गुरुवार को भारत के शतरंज विजेताओं को सम्मानित किया। इस दौरान उनके साथ खेल राज्य मंत्री रक्षा खडसे भी मौजूद रहीं। खेल मंत्री ने इस खास मुलाकात के दौरान डी हरिका के साथ शतरंज की बाजी भी खेली। बता दें कि, भारत के पुरुष और महिला शतरंज खिलाड़ियों ने इतिहास रचते हुए 45वें शतरंज ओलंपियाड में विजेता बनने का गौरव हासिल किया था।

मांडविया ने की विजेताओं की तारीफ

मांडविया ने भारत के शतरंज से जुड़ाव पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि इस खेल की शुरुआत भारत में हुई थी। खेल मंत्री ने कहा– वैश्विक मंच पर जीतकर आपने न केवल पूरे देश को गौरवान्वित किया है बल्कि हमारी पारंपरिक विरासत को भी सम्मानित किया है।

खिलाड़ियों को प्रेरित करना लक्ष्य

खेल मंत्री ने आगे कहा– भारत सरकार एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए प्रतिबद्ध है जो सभी खेल स्पर्धाओं में प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करे। हम चाहते हैं कि हमारे एथलीट विश्व मंच पर अपनी प्रतिभा दिखाने और देश का नाम रोशन करने के लिए प्रेरित महसूस करें। मांडविया ने पदक विजेताओं को खेल मंत्रालय के 'विकसित भारत राजदूत दृ युवा कनेक्ट कार्यक्रम' में भाग लेने के लिए भी आमंत्रित किया जिसका उद्देश्य 2047 तक विकसित भारत के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सपने को साकार करने में युवा ऊर्जा को दिशा देना है।

पुरुषों ने 21 और महिलाओं ने 19 अंक हासिल किए

शतरंज ओलंपियाड के 97 साल के इतिहास में पहली बार बेटों और बेटियों ने स्वर्ण जीता है। पुरुष टीम ने 11वें और अंतिम दौर में स्लोवेनिया को 3.5–0.5 से हराया और महिला टीम ने अजरबैजान को इसी अंतर से हराया। डी गुकेश, अर्जुन एरिगेसी, आर प्रज्ञानंद, विदित गुजराती और पी हरिकृष्णा की पुरुष टीम पूरे टूर्नामेंट में अजेय रही और कुल 22 में से 21 अंक हासिल किए। पुरुषों में अमेरिका ने रजत और उज्बेकिस्तान ने कांस्य जीता। डी हरिका, आर वैशाली, दिव्या देशमुख, वंतिका अग्रवाल और तानिया सचदेव की महिला टीम ने 19 अंक हासिल किए। कजाकिस्तान को रजत और अमेरिका को कांस्य मिला भारतीय खिलाड़ियों का व्यक्तिगत प्रदर्शन भी शानदार रहा। गुकेश ने शीर्ष बोर्ड और अर्जुन ने तीसरे बोर्ड पर स्वर्ण जीता। महिलाओं में दिव्या देशमुख ने तीसरे और वंतिका अग्रवाल ने चौथे बोर्ड पर स्वर्ण पदक जीता। इससे पहले 2014 और 2022 में पुरुषों ने कांस्य और महिलाओं ने 2022 में कांस्य पदक जीता था।

चेस ओलंपियाड जीतकर इतिहास रचने वाले खिलाड़ियों से मिले पीएम मोदी

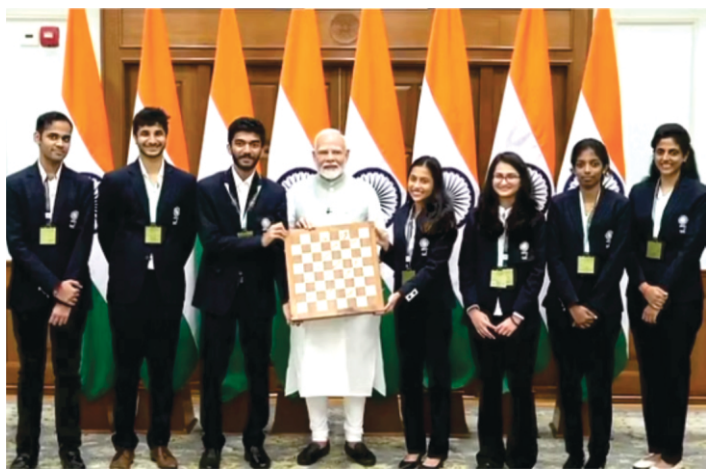

स्पोर्ट्स डेस्क। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 22 सितंबर को 45वें शतरंज ओलंपियाड में अपना पहला स्वर्ण पदक जीतने वाली भारतीय पुरुष और महिला टीमों के साथ बातचीत की। भारत की पुरुष और महिला टीमों के खिलाड़ियों से पीएम अपने नई दिल्ली स्थित आवास पर मिले। इस दौरान पीएम मोदी ने कहा, 'मुझे लगता है कि एक देश हर क्षेत्र और कार्यक्षेत्र में अपनी महारत और विशेषज्ञता के कारण समृद्ध होता है। यही बात देश को महान बनाती है। हमारे अंदर कुछ नया, कुछ और करने की भूख होनी चाहिए।'

पीएम ने शतरंज के खेल को बेहतर बनाने के लिए एआई के उपयोग पर शतरंज चैंपियनों से एक सवाल पूछा, जिस पर शतरंज के ग्रैंडमास्टर आर प्रज्ञानंद ने कहा, 'एआई के साथ शतरंज विकसित हुआ है। नई तक्नीक हैं और कंप्यूटर शतरंज में नए आइडियाज दे रहे हैं।' हरिका द्रोणावल्ली कहती हैं, 'यहां तक कि हमारे प्रतिद्वंद्वी भी हमारे लिए बहुत खुश थे।' शतरंज के ग्रैंडमास्टर विदित गुजराती कहते हैं, 'पिछले कुछ सालों में दर्शकों ने हमारा समर्थन करना शुरू कर दिया है।' इंटरनेशनल मास्टर तानिया सचदेव कहती हैं, 'इस बार हम स्वर्ण पदक जीतने के लिए बहुत प्रेरित और दृढ़ थे।'

विदित ने पीएम से मुलाकात के बाद कहा– इतने बिजी शेड्यूल में उन्होंने हमारे लिए समय निकाला, इतना प्रोत्साहित किया। तो ऐसा कुछ अच्छा प्रदर्शन हो और अगर आपको प्रधानमंत्री से शाबाशी मिले तो और क्या बोल सकते हैं। जिस तरह से उन्होंने हमसे बातचीत की, उन्होंने हमें सहज महसूस कराया। उन्होंने टूर्नामेंट के बारे में पूछा, हमसे हंसी मजाक किया तो हम सहज हो गए। उन्होंने बताया कि कैसे वो फैसले लेते हैं, वो कैसे इतनी सारी चीजें मैनेज करते हैं। वहीं, वंतिका अग्रवाल ने कहा, 'मेरा जन्मदिन 28 सितंबर को था और उन्हें याद था। उन्होंने मुझसे पूछा कि आप तीन दिन बाद क्या करने वाले हो अपने जन्मदिन पर? मुझे इतनी ज्यादा खुशी हुई क्योंकि मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि उन्हें मेरा जन्मदिन कैसे याद है। जब मैं नौ साल की थी तो मोदीजी ने गुजरात में बहुत बड़े कार्यक्रम का आयोजन किया था। तभी मैंने एशियन चैंपियनशिप्स जीता था। तभी मैंने दो स्वर्ण जीते थे तो उन्होंने मुझे वहां पर बुलाया था और सम्मानित किया था। तब मुझे इतनी ज्यादा प्रेरणा मिली थी कि उन्होंने मुझे सम्मानित किया था। तब मैंने सोच लिया था कि अब मुझे जीतना ही जीतना है। इंडिया के लिए खेलना है और इंडिया के लिए गोल्ड ही जीतना है।'

तानिया सचदेवा ने कहा, 'उनसे इतना कुछ सीखा। उनके अनुभव से पता चला कि वह दबाव वाली स्थिति से कैसे निपटते हैं। उनका खेल के प्रति लगाव और उनके साथ इस मीटिंग से हम में जोश भर गया। उन्होंने हमें इतना प्रोत्साहित और प्रेरित किया है, यह हम सभी के लिए एक खास पल है।' गुकेश डी ने कहा, 'पीएम को वंतिका का जन्मदिन याद था, जो दिखाता है कि उन्हें खेल और खिलाड़ियों से कितना प्यार है। यह जीत उनके लिए कितना मायने रखती है, यह देखकर बहुत ही खुशी हुई।' वैशाली रमेशबाबू ने कहा, 'जब मैंने उन्हें खुद के बारे में बताया तो उन्होंने कहा कि आपका भाई कहां है और आपकी मां किधर हैं? यह जानकर खुशी हुई कि उन्होंने मुझसे मेरे परिवार के बारे में पूछा। उन्होंने योगा और ध्यान लगाने का महत्व भी बताया और साथ ही फिजिकल फिटनेस को लेकर भी जानकारी दी।'

आर प्रज्ञानंद ने कहा, 'उन्हें काफी चीजों के बारे में काफी जानकारी है। उन्होंने हमें वहां सहज महसूस कराया और यह बहुत ही महत्वपूर्ण है।' हरिका ने कहा, 'कुछ समय बाद हम प्रधानमंत्री से बातचीत में इतने मशगूल हो गए कि हमने इस पर ध्यान नहीं दिया कि हम भारत के प्रधानमंत्री से बात कर रहे हैं। वह इतना जमीन से जुड़े व्यक्ति हैं कि हमें काफी सहज महसूस कराया और हमें लगा कि हम किसी आम व्यक्ति से आम बात कर रहे हैं। मुझे लगता है कि मैं इस अनुभव को जिंदगी भर याद रखूंगी।'

'चोट अब ठीक है

अगला बड़ा लक्ष्य 2025 विश्व चैंपियनशिप', नीरज चोपड़ा ने किया खुलासा

स्पोर्ट्स डेस्क। भारतीय स्टार भाला फेंक एथलीट नीरज चोपड़ा ने आगामी सत्र के लिए शत प्रतिशत फिट होने का वादा करते हुए शुक्रवार को कहा कि उनका अगला लक्ष्य 2025 टोक्यो विश्व चैंपियनशिप में पोडियम पर जगह हासिल करना है। ओलंपिक में दो बार के पदक विजेता नीरज ब्रुसेल्स में डायमंड लीग के फाइनल में दूसरे स्थान रहे थे। वह अपने मौजूदा सत्र को समाप्त कर स्वदेश वापस आ गए हैं। टोक्यो ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने वाले नीरज ने पेरिस ओलंपिक में रजत पदक अपने नाम किया। वह लगातार दो ओलंपिक में पदक जीतने वाले भारत के पहले ट्रैक एवं फील्ड एथलीट हैं। इस 26 साल के खिलाड़ी ने हरियाणा खेल विश्वविद्यालय की 'मिशन ओलंपिक 2036' पर आयोजित एक सम्मेलन के मौके पर कहा, 'मेरा सत्र अब खत्म हो गया है। अगले साल का सबसे बड़ा लक्ष्य विश्व चैंपियनशिप है और हम इसके लिए अभी से तैयारी शुरू कर देंगे। ओलंपिक हमेशा हमारे दिमाग में रहता है, लेकिन उसके लिए हमारे पास चार साल हैं।'

विश्व चैंपियनशिप अगले साल 13 से 21 सितंबर तक आयोजित होने वाली है। चोपड़ा पूरे साल मांसपेशियों की चोट से जूझते रहे और इससे ओलंपिक और डायमंड फाइनल दोनों में उनका प्रदर्शन प्रभावित हुआ। डायमंड लीग फाइनल में उन्होंने टूटे हुए बाएं हाथ के साथ भी प्रतिस्पर्धा की थी। उन्होंने सत्र के अंत में डॉक्टरों से सलाह लेने की बात कही थी ताकि यह तय किया जा सके कि चोट से उबरने के लिए सर्जरी की जरूरत होगी या नहीं। चोपड़ा ने फिटनेस के बारे में पूछे जाने पर चोट की चिंताओं को नजरअंदाज करते हुए कहा कि अपनी तकनीक में सुधार करने पर ध्यान दे रहे हैं। उन्होंने कहा, 'मेरे लिए यह साल चोटों से भरा रहा है लेकिन अब चोट अब ठीक है। मैं नये सत्र के लिए पूरी तरह से फिट हो जाउंगा।' उन्होंने कहा, 'तकनीकी मुद्दे भी हैं लेकिन हम उन पर काम करेंगे। मैं अपनी तकनीक में सुधार करने पर ध्यान दूंगा।

मैं भारत में भी अभ्यास करना पसंद करता हूं लेकिन जब प्रतियोगिताएं शुरू होती हैं तब मेरे लिए विदेश में अभ्यास करना सही रहता है।' भारतीय खिलाड़ियों के ओलंपिक में छह पदक जीते लेकिन इसमें कोई स्वर्ण पदक नहीं था। इसके बारे में पूछे जाने पर चोपड़ा ने कहा, 'हमारे कई खिलाड़ी चौथे स्थान पर थे। (लेकिन) इस बार, हमने पैरालंपिक में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया और कई पदक जीते। आने वाले समय में हमें ओलंपिक और पैरालंपिक दोनों में मजबूत प्रदर्शन की उम्मीद है।'

दी नेक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः– 273003

Tital code: UPHIN51019

बृजेन्द्र कुमार
मो0. नं0. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com

नोटः– समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।